हिन्दी मंजरी

नवीं कक्षा के लिए

(तीसरी भाषा-हिन्दी)

प्रकाशक

माध्यमिक शिक्षा परिषद, ओड़िशा

माध्यमिक शिक्षा परिषद, ओड़िशा द्वारा अनुमोदित और प्रकाशित
नवीं कक्षा के लिए (तीसरी भाषा-हिन्दी)

© माध्यमिक शिक्षा परिषद, ओड़िशा

संपादक मंडल

डॉ. रवीन्द्र नाथ मिश्र (पुनरीक्षक)
डॉ. बलराम मिश्र (लेखक)
डॉ. सनातन बेहेरा (लेखक)
डॉ. विष्णुचरण स्वाईं (लेखक)

संयोजक

श्री राजकिशोर चौधुरी

प्रथम संस्करण :

टंकण :
मुद्रण :

मूल्य :

भूमिका

समय की माँग को ध्यान में रखकर शिक्षा-जगत् में तेजी से परिवर्त्तन आ रहा है । कक्षा-अध्ययन को जीवन से जोड़ना जरूरी है । नये विषय, नयी लेखन-प्रणाली, नयी शैली के द्वारा विद्यार्थियों को पाठ्य-पुस्तक के प्रति आकृष्ट किया जा सकता है । नये युग का नया ज्ञान इन पुस्तकों में शामिल है । नयी शिक्षा-नीति में इस पर जोर दिया गया है, माध्यमिक शिक्षा-परिषद इस ओर सदैव सजग है । हाईस्कूल परीक्षा के लिए नयी पाठ्य-पुस्तकें तैयार की जा रही हैं । इस योजना की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में नवीं कक्षा के लिए यह हिन्दी पाठ्य-पुस्तक प्रकाशित की जा रही है ।

जिन विद्वानों ने इस कार्य में हमारी सहायता की है, हम उनके प्रति आभार व्यक्त कर रहे हैं । आशा करते हैं कि यह पुस्तक हिन्दी शिक्षकों और विद्यार्थियों की रुचि के अनुकूल होगी ।

सभापति

माध्यमिक शिक्षा परिषद

ओड़िशा

प्रस्तावना

आधुनिक युग जन-संपर्क का युग है । इसमें अनेक भाषाएँ सीखना आवश्यक है । हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है और राजभाषा भी । नई शिक्षा नीति में इस पर अधिक जोर दिया जा रहा है, क्योंकि अपने प्रांत से बाहर निकलते ही छात्र-छात्राओं को हिन्दी में बात करने की जरूरत पड़ती है ।

यह पुस्तक उन विद्यार्थियों के लिए लिखी गई है जिनकी तीसरी भाषा हिन्दी है । अतएव पाठों की भाषा सरल है, किंतु विषय उम्र के अनुकूल रखे गए हैं । पुस्तक में बोलना और लिखना या दोनों पर महत्त्व दिया गया है । विषय आकर्षक और रुचिकर हैं । अभ्यास के लिए अनेक प्रकार के प्रश्न दिए गए हैं ताकि भाषा की क्षमता आसानी से बढ़े । शिक्षकों से अनुरोध है कि वे इनका उपयोग करें । हमें विश्वास है कि यह पुस्तक छात्र-छात्राओं तथा शिक्षकों को पसंद आएगी ।

इसमें जिन विद्वानों की कृतियाँ संकलित हैं हम उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं ।

लेखक संपादक मंडल

विषय - सूची

भाग-1

क्र.सं.	विषय	कवि / लेखक	पृष्ठ सं.
	पद्य विभाग		
1.	**अनमोल मोती**		
	दोहे -	कबीरदास	01
	पद -	सूरदास	06
	दोहे -	तुलसीदास	10
	दोहे -	रहीम	13
	कुंडलिया -	गिरिधर कविराय	17
2.	प्रियतम	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	20
3.	राहुल जननी	मैथिली शरण गुप्त	27
4.	फिर महान बन	नरेन्द्र शर्मा	33
5.	मेरा नया बचपन	सुभद्रा कुमारी चौहान	38
6.	साथी ! दुःख से घबराता है ?	गोपाल दास 'नीरज'	46

PXHPPR

क्र.सं.	विषय	कवि / लेखक	पृष्ठ सं.
	गद्य विभाग		
1.	श्रम की प्रतिष्ठा (निबंध)	विनोबा भावे	51
2.	ममता (कहानी)	जयशंकर प्रसाद	61
3.	जेल में मेरे मित्र (अनुभव)	पं. जवाहरलाल नेहरू	74
4.	वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर वेंकट रामन (विज्ञान)	धीरंजन मालवे	87
5.	अध्यापक के नाम पत्र (पत्र)	अब्राहम लिंकन	98

अनमोल मोती

कबीर दास

कवि परिचय :

सन्त कबीर दास का जन्म सन् 1398 में काशी के एक हिन्दू-परिवार में हुआ । पर उनका पालन-पोषण नीरू और नीमा नामक मुसलमान जुलाहा दम्पति ने किया । इसलिए कबीर दास को हिन्दू और मुसलमान-दोनों के गुण मिले । कबीर को किसी विद्यालय में पढ़ने का सुयोग नहीं मिला । लेकिन वे बड़े तेज बुद्धिवाले बालक थे । वे जुलाहे का काम करते थे । दुनिया को देखकर उन्होंने बहुत कुछ सीख लिया । समाज में व्याप्त बुराई को देख उन्हें बहुत दु:ख हुआ । लोगों को अच्छी बातें सीखाने के लिए वे कमर कसकर खड़े हो गये । जाति-भेद, धार्मिक अन्धविश्वास और बाहरी क्रिया-कलाप जिसमें आन्तरिक भाव नहीं था - कबीर को पसन्द न आया । उन्होंने लोगों को काम करने, दूसरों के साथ अच्छा बर्त्ताव करने, बुद्धि और विचार से काम लेने का आग्रह किया । उस समय के हिन्दू और मुसलमान-दोनों संप्रदायों में फैले हुए धार्मिक अन्धविश्वासों, सामाजिक रूढ़ियों, बुरे तथा अमानवीय रीति- रिवाजों एवं कुसंस्कारों को मिटाने को कबीर डट कर खड़े हुए । उन्होंने जाति-धर्म से परे जीवन के मानवतावादी दृष्टिकोण को अपनाया जिसे गृहस्थ और संन्यासी, हिन्दू और मुसलमान, शैव और वैष्णव, शाक्त और योगी एवं सिद्ध आदि स्वीकार कर सकें । कबीर ने तप, तीर्थ, व्रत, सन्ध्या, नमाज आदि के बदले नैतिकता, सदाचार, ज्ञान और भगवत् प्रेम पर जोर दिया ।

'साखी' शब्द 'साक्षी' का अपभ्रंश रूप है । यह शब्द ज्ञान और अनुभूति का प्रतीक है । यह वह ज्ञान या अनुभूति है जिसे स्वयं कवि ने अपने अन्त:करण से साक्षात्कार किया है । कबीरदास की साखियाँ इसी ज्ञान और अनुभूति की साक्षी हैं अर्थात् साक्षात्कार करने और करनेवाली हैं ।

कबीर की भाषा सधुक्कड़ी है ।

दोहे

- **मनिषा जनम दुर्लभ है, देह न बारम्बार ।**
  तरवर थै फल झड़ि पड़्या, बहुरि न लागै डार ।।

- **सोना सज्जन साधु जन टूटि जुरै सौ बार ।**
  दुर्जन कुंभ कुम्हार के, एकै धका दरार ।।

शब्दार्थ

मनिषा - मनुष्य । दुर्लभ - मिलना मुश्किल है । देह - शरीर । तरवर - पेड़ । डार- डाली । जुरै- जुड़ जाते हैं । दरार - फटना या मिटना । धका - धक्का या झोंका ।

इन दोहों को समझें :

1. संसार में मनुष्य का जन्म दुर्लभ होता है । मनुष्य की देह या शरीर बार-बार नहीं मिलता । वृक्ष से फल के एक बार झड़ जानेके बाद यह पुनः उस पेड़ की डाली पर लग नहीं सकता । मतलब यह है कि मानव को समस्त सांसारिक विषय - वासनाओं को त्याग करना चाहिए । इस क्षणभंगुर शरीर के रहते साधना के जरिये ईश्वर की उपासना करनी चाहिए । तभी दुर्लभ मानव-जीवन का सदुपयोग हो सकेगा ।

2. सज्जन और साधुजन सोने जैसे होते हैं जो टूटने के बाद भी सौ बार जुड़ सकते हैं; जबकि दुर्जन या बुरे व्यक्ति कुम्हार के घड़े जैसे होते हैं जो एक धक्के या झटके से टूट जाते हैं । मतलब सज्जन लोग सर्वदा मित्रता बनाये रखते हैं, मगर दुर्जन जरा-सा खटपट होते ही अलग हो जाता है ।

यह भी जानें :

दोहा हिंदी का छोटा-सा छंद है । इसे समझिए और याद कीजिए ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए ।

(क) मनुष्य के जन्म को दुर्लभ क्यों कहा गया है ?

(ख) साधुओं और सज्जनों की तुलना किससे की गयी है और क्यों ?

(ग) कुम्हार का कुंभ किसे कहा गया है और क्यों ?

(घ) कबीरदास के दोहों को 'साखी' क्यों कहा जाता है ?

2. निम्नलिखित अवतरणों का आशय स्पष्ट कीजिए ।

(क) मनिषा जनम दुर्लभ है, देह न बारम्बार ।

(ख) दुर्जन कुंभ कुम्हार के, एकै धका दरार ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए ।

(क) किसके जन्म को दुर्लभ माना गया है ?

(ख) कौन-कौन टूट जानेके बाद भी जुड़ सकते हैं ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक शब्द में दीजिए ।

(क) क्या बार-बार नहीं मिलता ?

(ख) सज्जनों की तुलना किससे की गयी है ?

(ग) कुम्हार का कुंभ किसे कहा गया है ?

5. कबीरदास के दोहों को कण्ठस्थ कीजिए ।

भाषा - ज्ञान

1. कबीरदास संत थे । काशी में रहते हुए भी उन्होंने देश के विभिन्न स्थानों का भ्रमण किया । अत: उनकी भाषा में विभिन्न प्रदेशों के शब्द पाये जाते हैं । उनकी भाषा में ब्रजभाषा, अवधी, मगही, भोजपुरी, बुन्देलखण्डी, राजस्थानी, पंजाबी आदि का मेल है । साथ ही बोलचाल के क्षेत्रीय प्रभावों के कारण कबीरदास के कुछ शब्द रूपों में परिवर्त्तन भी देखने को मिलता है । जैसे- मनुष्य से मनिषा, मन से मनवा या मनुवा आदि । उच्चारण के परिवर्त्तन से वर्त्तनी भी बदल जाती है ।

नीचे कुछ शब्द दिये जा रहे हैं जिनका मूल रूप लिखिए जो आप समझते हैं -

मनिषा - [ ] जुरै - [ ]

बहुरि - [ ] धका - [ ]

2. निम्नलिखित शब्दों का समानार्थी शब्द लिखिए ।

मनिषा, देह, तरवर, सोना, कुंभ

3. निम्नलिखित शब्दों का विपरीत शब्द लिखिए ।

जनम, दुर्लभ, सज्जन, साधु

4. निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्त्ति कीजिए ।

(क) मनिषा जनम ________ है, ________ न बारम्बार ।

(ख) ________ सज्जन साधुजन ________ सौ बार ।

(ग) दुर्जन ________, एकै धका ________ ।

5. निम्नलिखित शब्दों को पाँच-पाँच बार लिखिए ।

कबीर - ....

अनमोल - ....

मोती - ....

दुर्लभ - ....

कुम्हार - ....

(ध्यान दीजिए कि हिन्दी में ह्रस्व और दीर्घ मात्राएँ होती हैं । उनको सही लिखना जरूरी है ।)

●

सूरदास

कवि परिचय :

सूरदास भक्ति-काल के सर्वश्रेष्ठ कृष्ण-भक्त कवि हैं । उनका जन्म सन् 1478 में दिल्ली के निकट सीही नामक गाँव के एक गरीब ब्राह्मण परिवार में हुआ । वे अंधे थे, पर लगता है- वे जन्म से अंधे नहीं थे । मथुरा और आगरा के बीच यमुना नदी के तट पर स्थित गऊघाट पर उन्होंने संगीत, काव्य और शास्त्र का अभ्यास किया और विनय के भाव से पदों की रचना की । आगे चलकर वे वल्लभाचार्य के शिष्य बन गये और ब्रज जाकर गोवर्धन के पास पारसोली नामक जगह पर अपना स्थायी निवास बनाकर पद लिखते रहे ।

सूरदास वात्सल्य रस के बड़े भावुक कवि थे । ब्रजभाषा पर उनका पूरा अधिकार था । 'सूरसागर' उनकी प्रमुख प्रामाणिक रचना है । इसमें उन्होंने श्रीकृष्ण की वाललीलाओं का वर्णन बहुत सुन्दर ढंग से किया है । कवि ने कृष्ण का पालने पर झूलना, घुटनों के बल पर चलना, चाँद के लिए मचलना, नहाते समय रूठ जाना, मक्खन की चोरी करना, मिट्टी खाना - आदि प्रसंगों का बड़ा मनमोहक वर्णन सहज-सुन्दर-सरस ढंग से किया है ।

श्रीकृष्ण की बाल-लीला के प्रसंग में कवि ने माखन-चोरी का सुन्दर चित्र अंकित किया है । गोपिकाओं के मन में यह अभिलाषा है कि बालक कृष्ण उनके घर आएँ, उनकी मटकी में हाथ डालकर माखन की चोरी करें । कृष्ण भी उनकी अभिलाषा पूरी करते हैं । चोरी पकड़ी जाती है, माता यशोदा से शिकायत भी पहुँचती है ।

पद

''तेरो लाल मेरी माखन खायो ।
दुपहर दिवस जानि घर सूनी, ढूँढ़ि ढँढोरि जाय ही आयो ।
खोल किवार सून मँदिर में, दूध, दही सब माखन खबायो ।
छींकै काढ़ि खाट चढ़ मोहन, कछु खायो कछु लै ढरकायो ।
दिन प्रति हानि होत गोरस की, यह ढोटा कौन रंग लायो ।
सूरदास कहति ब्रजनारि, पूत अनोखो जायो ।''

शब्दार्थ

लाल - पुत्र । ढूँढि ढँढोरि - खोज-खाजकर । किवार - किवाड़ या दरवाजा । मँदिर - घर । छींका- शिक्या, रस्सी या तार आदि का जाल जो छत में या ऊँचे स्थान पर खाने-पीने की चीजें रखनेके लिए लटकाया जाता है । मोहन - कृष्ण । ढरकायो - गिरा दिया । गोरस - दूध, दही, मठा, छाछ आदि । ढोटा - पुत्र । पूत - पुत्र । अनोखा - आश्चर्यजनक ।

पद को समझें :

बालक-कृष्ण की दधि-चोरी की लीला का वर्णन है । ब्रजभूमि की एक ग्वालिन माता यशोदा से शिकायत करती है कि तेरे लड़के ने हमारा माखन खा लिया । दोपहर को घर सूना देखकर, खोज-खाजकर तेरा बेटा मेरे घर में घुस गया । उसने सूने घर का किवाड़ खोल दिया और घर में जो कुछ दूध-दही-माखन रखा था, सब के सब साथियों को खिला

दिया । खाट पर चढ़कर उसने छींके पर रखे हुए दही को खा लिया और कुछ गिरा दिया । इस प्रकार हर दिन दूध, दही, माखन का नुकसान होता है । पता नहीं, यह लड़का कौन-सा रंग या ढंग लाया है ? तुमने तो एक अनोखे लड़के को जन्म दिया है ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए ।

(क) ब्रजनारी माता यशोदा से कौन-सी शिकायतें करती हैं ?

(ख) बालकृष्ण की माखन-चोरी का वर्णन कीजिए ।

(ग) ब्रजनारी ने माता यशोदा से यह क्यों कहा कि 'पूत अनोखा जायो' ? इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए ।

(क) कौन किससे शिकायत करता है ?

(ख) किस पर चढ़कर कृष्ण दही निकालते हैं ?

(ग) ब्रजनारी ने किसे अनोखा कहा है ?

(घ) 'कौन रंग लायो' का अर्थ क्या है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक शब्द में दीजिए ।

(क) यहाँ लाल किसे कहा गया है ?

(ख) किस समय घर सूना था ?

(ग) प्रतिदिन किसकी हानि होती थी ?

(घ) दही कहाँ रखा हुआ था ?

भाषा - ज्ञान

1. 'माखन' एक संज्ञा-पद है । इस तरह इस पद में जितने संज्ञा पद हैं - उन्हें छाँटकर लिखिए । नीचे कुछ शब्द दिये जा रहे हैं जिनका वह रूप लिखिए जो आप समझते हैं -

याद रखिए - किसी प्राणी, वस्तु या स्थान के नाम, गुण अथवा अवस्था को बतानेवाले शब्द को संज्ञा कहा जाता है ।

संज्ञा के पांच भेद हैं-

क. व्यक्तिवाचक संज्ञा - राम, सीता, महानदी, कटक

ख. जातिवाचक संज्ञा - मनुष्य, गाय, नदी, शहर

ग. भाववाचक संज्ञा - वीरता, सच्चाई, गरीबी

घ. समूहवाचक संज्ञा - मेला, गुच्छा, परिवार

ङ. द्रव्यवाचक संज्ञा - सोना, लोहा

2. **निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची (समानार्थी) शब्द लिखिए ।**

लाल ____________, माखन ____________

दिवस ____________, किवार ____________

पूत ____________, अनोखा ____________

3. **नीचे लिखे सही शब्द पर सही (✓) का चिह्न लगाइए ।**

दिवस - दीवस, दहि - दही, हानि - हानी, नारि - नारी

4. **तुक मिलाइए ।**

मेरी	खायो	गोरस
....	....	....
....	....	....

●

तुलसीदास

कवि परिचय :

हिन्दी साहित्य के भक्ति-काल में गोस्वामी तुलसीदास का स्थान सर्वोपरि है । तुलसीदास का जन्म सन् 1532 में भाद्र-शुक्ल एकादशी, मंगलवार को हुआ । उनके पिता का नाम आत्माराम और माता का नाम हुलसी था । जन्म लेते ही तुलसीदास ने राम-नाम का उच्चारण किया; इसीलिए उन्हें 'रामबोला' के नाम से भी पुकारा गया । तुलसीदास के गुरु श्री नरहरिदास थे । तुलसीदास का विवाह दीनबंधु पाठक की कन्या रत्नावली से हुआ । पत्नी की प्रेरणा से तुलसीदास अपना घर छोड़कर वैरागी हो गये । वे काशी में रहे और सांसारिक विषय-वासनाओं को त्यागकर राम-भक्ति में लीन हो गये । वे अवधी तथा ब्रजभाषा में काव्य-रचना करते रहे ।

तुलसीदास की प्रमुख रचनाएँ हैं- रामचरितमानस, कवितावली, गीतावली, दोहावली, बरवै रामायण, रघुवरशलाका, जानकी-मंगल, श्रीरामलला-नहछू, श्रीपार्वतीमंगल और विनय-पत्रिका ।

दोहे

- **तुलसी काया खेत है, मनसा भयो किसान ।**
  पाप-पुण्य दोउ बीज हैं, बुवै सो लुनै निदान ।।

- **बहुसुत, बहुरुचि, बहुवचन, बहु अचार-व्यौहार ।**
  इनको भलो मनाइबो, यह अज्ञान अपार ।।

शब्दार्थ

काया - शरीर । मनसा - मन । दोउ - दो । बुवै - बोता है । लुनै - प्राप्त करता है । बहुसुत - अनेक संतान । बहुरुचि - अधिक कामना । अपार - ज्यादा । अचार - व्यौहार - आचार - व्यवहार ।

दोहों को समझें :

- मानव का शरीर कर्मक्षेत्र है । उसका मन किसान है । पाप और पुण्य दो बीज हैं । जो जैसा बीज बोता है, वह उसी प्रकार फल प्राप्त करता है । मतलब यह है कि मनुष्य जैसा कर्म करता है, उसी के अनुसार फल पाता है ।
- जान-बुझकर गलती करनेवाले को उपदेश देना मूर्खता है । जिस व्यक्ति की अनेक संतानें हों, अनेक कामनाएँ हों और समयानुसार जिनके आचार-व्यवहार बदलते हों; उन लोगों की भलाई चाहना मूर्खता है ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए ।

(क) 'बुवै सो लुनै निदान' का तात्पर्य क्या है ? पठित दोहे के आधार पर समझाइए ।

(ख) किन-किन लोगों की भलाई करने को अज्ञान कहा गया है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक शब्द में दीजिए ।

(क) खेत किसे कहा गया है ?

(ख) किसान कौन है ?

(ग) पाप-पुण्य क्या हैं ?

(घ) जिसकी अनेक संतान हों, उसकी भलाई चाहना क्या है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए ।

(क) मानव के शरीर को क्या कहा गया है ?

(ख) दो बीज कौन-कौन - से हैं ?

(ग) बार-बार अपने आचार - व्यवहार को बदलनेवाले की भलाई चाहने को क्या कहा गया है ?

भाषा - ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों का समानार्थी शब्द लिखिए ।

काया, किसान, सुत, मनसा

2. निम्नलिखित शब्दों का विलोम शब्द लिखिए ।

पाप, अज्ञान, अपार

3. निम्नलिखित अशुद्ध शब्दों को शुद्ध कीजिए ।

तुलसि, किषान, पुन्य, सूत, रूचि

4. इन शब्दों पर ध्यान दीजिए ।

काया, किसान, बीज, सुत

इन शब्दों से उनकी पूरी जाति का बोध होता है ।

याद रखिए -

जिस शब्द से पूरी जाति का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं ।

●

रहीम

कवि परिचय :

रहीम का पूरा नाम अब्दुल रहीम खानखाना था । उनका जन्म सन् 1556 के लगभग लाहौर में हुआ । उनके पिता मुगल बादशाह अकबर के अभिभावक तथा सेनापति बैरम खाँ थे । रहीम मुगलों के महल में पले-बढ़े । वे बड़े प्रतिभाशाली थे । वे अरबी, तुर्की, फारसी और संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे, साथ ही हिन्दी काव्य-कविता के बड़े मर्मज्ञ थे । इसलिए अकबर के दरबार के मशहूर नवरत्नों में रहीम गिने जाते थे । वे जन्म से मुसलमान होते हुए भी हिन्दुओं के प्रति प्रेम-भाव रखते थे ।

रहीम तुलसीदास, सूरदास, तानसेन और केशवदास के समकालीन थे । मार्मिकता और कवि-हृदय की सच्ची संवेदना रहीम के साहित्य की विशेषता है । मुसलमान होते हुए भी उन्होंने अपने आपको कृष्ण-भक्ति के गहरे रंग में रंगा लिया था । अनुभूतियों के आधार पर उन्होंने अपनी रचनाओं में नीति के साथ-साथ भक्ति तथा प्रेम का सरस वर्णन किया है । उन्होंने अपने दोहों में मानव तथा समाज के कल्याण के साथ-साथ हिन्दू-मुस्लिम की एकता पर भी बल दिया है ।

रहीम की रचनाएँ हैं- रहीम सतसई, श्रृंगार सतसई, रास पंचाध्यायी, रहीम रत्नावली, बरवै नायिका भेद-वर्णन आदि ।

उनकी काव्य-रचना में प्रयुक्त छन्द हैं- दोहा, कवित्त, सवैया, सोरठा तथा बरवै ।

रहीम की भाषा ब्रज और अवधी है ।

दोहे

- **जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग ।**
  चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ।

- **कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत ।**
  बिपत्ति कसौटि जे कसे, तेइ साँचे मीत ।।

शब्दार्थ

उत्तम - श्रेष्ठ । प्रकृति - गुण, स्वभाव । का - क्या । करि सकत - कर सकता है । कुसंग - बुरी संगति । लपटे - लिपटना । भुजंग - सांप । सगे - साथी । बहु रीत - बहु भाँति । कसौटि - परख या जाँच । कसे - परखे । तेई - वही । साँचे - सच्चा । मीत- मित्र ।

दोहों को समझें :

- रहीम कहते हैं कि जो व्यक्ति उत्तम आचरण और गुणों का होता है, उस पर कुसंग यानी बुरी संगति का प्रभाव नहीं पड़ता । अर्थात् सज्जन व्यक्ति बुरे लोगों के निकट होने पर भी उनकी बुराई को नहीं अपनाता । जैसे - चन्दन-पेड़ पर जहरीले साँप लपेटे रहने पर भी चन्दन पर उसके जहर का कोई असर नहीं होता । यहाँ चन्दन-पेड़ के साथ उत्तम गुणवाले व्यक्ति तथा साँप के साथ कुसंग की तुलना की गयी है ।

- रहीम का कहना है कि इस संसार में धन-दौलत के साथी अनेक होते हैं । अर्थात् किसी इन्सान के पास पैसा होने पर उससे मित्रता स्थापित करने लोग विविध ढंग से

आ टपकते हैं । परंतु उनमें से कौन सच्चा मित्र है और कौन नहीं, इस बात का पता विपत्ति के समय चलता है । अर्थात् सच्चा मित्र उसे कहा जाएगा जो अपने मित्र को उसके दुर्दिन में भी न छोड़े, अपितु उसकी सहायता करे ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए ।

(क) उत्तम प्रकृतिवाले लोगों के प्रति रहीम ने क्या कहा है ?

(ख) सच्चे मित्र का लक्षण क्या है - पठित दोहे के आधर पर समझाइए ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक शब्द में दीजिए ।

(क) किस पर कुसंग का प्रभाव नहीं होता ?

(ख) चन्दन वृक्ष पर कौन लिपटा रहता है ?

(ग) किस पर साँप के विष का प्रभाव नहीं होता ?

(घ) साँप के साथ किसकी तुलना की गयी है ?

(ङ) सच्चा मित्र कौन होता है ?

3. अर्थ स्पष्ट कीजिए ।

(क) चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ।

(ख) विपत्ति कसौटि जे कसे, तेइ साँचे मीत ।

4. पंक्तियाँ पूरी कीजिए ।

(क) जो रहीम उत्तम प्रकृति, ... ।

(ख) ...., तेइ साँचे मीत ।

भाषा - ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्द लिखिए ।

उत्तम ________, मित्र ________

कुसंग ________, विष ________

2. नीचे लिखे अशुद्ध शब्दों को शुद्ध कीजिए ।

कसौटि, मीत्र, संपति, भूजंग, उतम

3. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए ।

विष, भुजंग, उत्तम, विपत्ति, मित्र

4. नीचे लिखे शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

कुसंग, कसौटी, चंदन, संपत्ति, मित्र

●

कुंडलिया

गिरिधर कविराय

कवि परिचय :

गिरिधर कविराय के जीवन के बारे में प्रामाणिक जानकारी नहीं मिलती । शिवसिंह सेंगर ने इनका जन्मकाल सन् 1713 ई. बताया है । लोग इन्हें अवध का निवासी मानते हैं । कविराय नाम से ऐसा लगता है कि वे जाति के भाट थे । जो भी हो, गिरिधर कविराय रीतिकाल के प्रसिद्ध नीतिकाव्यकार के रूप में सुपरिचित हैं । उनकी कुंडलियाँ विख्यात हैं और उत्तर भारत की जनता में खूब प्रचलित हैं । इनमें दैनिक जीवन के लिए अत्यंत उपयोगी बातें कही गई हैं । सीधी-सादी तथा सरल भाषा में रचित होने के कारण ये ज्यादा लोकप्रिय हुईं । कुछ विद्वानों का मानना है कि ‘साईं’ शब्दवाली कुंडलियाँ गिरिधर की पत्नी की रची हुई हैं । गिरिधर की कुंडलियाँ अधिकतर अवधी भाषा में ही मिलती हैं ।

बिना बिचारे जो करै, सो पाछे पछताय ।
काम बिगारै आपनो, जग में होत हँसाय ।।

जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न पावै ।
खान-पान सनमान, राग रँग मनहिं न भावै ।।

कह गिरिधर कविराय, दु:ख कछु टरत न टारे ।
खटकत है जिय माँहि, कियो जो बिना बिचारे ।।

शब्दार्थ

पाछे - पीछे, बाद में । बिगारै - बिगाड़ना । आपनो - अपना । होत - होना । हँसाय - हँसी, मज़ाक । चित्त - मन । चैन - आराम । पान - पीना । राग - गीत-संगीत । भावै - पसंद आना । कछु - कुछ । टरत - टलना, हटना, दूर होना । टारे - टालना । खटकत - बुरा लगना । जिय - हृदय, मन । माँहि - बीच में ।

यह कुंडलिया :

कवि का यह कहना है कि हर व्यक्ति को सोच विचार करके काम करना चाहिए । जो बिना सोच विचार के काम में लग जाता है उसे बाद में पछताना पड़ता है । क्योंकि उसका काम बिगड़ जाता है । संसार में वह हँसी का पात्र बनता है । मानसिक रूप से बेचैन रहता है । खान-पान और मान-सम्मान उसे अच्छे नहीं लगते । मनोविनोद के सारे साधन फीके लगते हैं । दु:ख को दूर करने के सारे प्रयत्न बेकार हो जाते हैं । मूल्यवान समय बर्बाद हो जाता है । बार-बार यह बात उसके मन को व्यथित करती है कि बिना सोचे और विचारे मैंने यह काम क्यों किया ? अतएव जीवन में कोई भी काम करने से पहले हमें भली-भाँति सोच विचार कर लेना चाहिए ताकि बाद में पछताना न पड़े ।

प्रश्न और अभ्यास

1. दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(क) बिना सोच और विचार के काम करने से क्या नतीजा होता है ?

2. एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(क) कौन पीछे पछताता है ?

(ख) जगत में किसकी हँसी होती है ?

(ग) कौन अपना काम बिगाड़ता है ?

(घ) क्या टालने पर नहीं टलता ?

(ङ) मन में कौन-सी बात खटकती रहती है ?

3. खाली स्थान भरिए :

(क) जग में होत हँसाय, ... न पावै ।

(ख) .... बिगारै आपनो, ... में होत हँसाय ।

(ग) .... , राग रँग मनहिं न भावै ।

भाषा - ज्ञान

1. नीचे लिखे शब्दों से वाक्य बनाइए :

जग, चैन, खान-पान, दुःख

2. दिये गये उदाहरणों की तरह पाठ से दूसरे तुकांत शब्दों को छाँटिए :

उदाहरण : पछताय

हँसाय

3. 'खान-पान' का अर्थ है 'खान' और 'पान' । इसी प्रकार और पाँच उदाहरण दीजिए ।

गृहकार्य :

(क) क्या आप विचार किये बिना कार्य करके उसका नतीजा भोग चुके हैं ? जीवन की एक ऐसी घटना का वर्णन कीजिए ।

(ख) पठित कुंडलिया की आवृत्ति कीजिए और इसे याद रखिए ।

●

प्रियतम

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

PY1GT2

कवि परिचय :

कवि सूर्यकांत त्रिपाठी का जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल नामक नगर में सन् 1897 ई. में हुआ था । पढ़ाई-लिखाई वहीं हुई । उनका जीवन अभावों और विपत्तियों से पीड़ित रहा । लेकिन उन्होंने किसी विपत्ति के सामने झुकना नहीं सीखा । हमेशा संघर्ष करते रहे । जिन्दगी भर गरीबी में दिन काटे । लेकिन बड़े दानी थे और बड़े स्वाभिमानी भी । वे हिन्दी, संस्कृत, बंगला आदि अनेक भाषाओं के पंडित थे । संगीत के अच्छे जानकार थे । वे छायावादी युग के कवि थे । उन्होंने मुक्तछन्द में कविता लिखना भी आरंभ किया । प्राकृतिक दृश्यों, मानवीय भावों तथा भारतीय संस्कृति को अपने काव्यों का विषय बनाया । अन्याय, अत्याचार व संकीर्णता के प्रति सदा विद्राही बने रहे । परंपरा से हटकर उन्होंने नूतनता को अपनाया । दीन-दु:खी-पीड़ित जनता के प्रति गहरी सहानुभूति व्यक्त की । उनकी कविता में जीवन-संग्राम में लड़ने की प्रेरणा निहित है ।

उनकी रचनाएँ : 'परिमल', 'गीतिका', 'अनामिका', 'कुकुरमुत्ता', 'अणिमा', 'बेला', 'नये-पत्ते', 'अपरा' आदि काव्य-संग्रह; 'अलका', 'प्रभावती', 'निरुपमा' आदि उपन्यास; 'चतुरी चमार', 'सुकुल की बीबी' आदि कहानी-संग्रह तथा 'प्रबंध प्रतिमा' निबंध- संग्रह ।

भाव-बोध :

भगवान विष्णु किसान को अपना सबसे बड़ा भक्त मानते हैं । नारदजी को यह बात अच्छी नहीं लगती और वे नम्रतापूर्वक उसका विरोध करते हैं । भगवान् नारद जी की परीक्षा लेते हैं जिसमें वे सफल नहीं हो पाते । अन्त में नारदजी अपनी हार स्वीकार कर लेते हैं । निराला जी प्रस्तुत कविता के जरिए यह संदेश देना चाहते हैं कि कर्म ही ईश्वर है । इसलिए हर एक व्यक्ति को कर्म करना चाहिए । कर्म से निवृत्त रहकर सिर्फ भगवान का नाम लेने से कोई आगे नहीं बढ़ सकता या ईश्वरीय सान्निध्य प्राप्त नहीं कर सकता । कर्म करते हुए तथा सारी जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए भी भगवान का नाम नहीं भूलना चाहिए ।

एक दिन विष्णु के पास गये नारदजी,
पूछा, 'मृत्युलोक में वह कौन है पुण्यश्लोक
भक्त तुम्हारा प्रधान' ?
विष्णुजी ने कहा-
'एक सज्जन किसान है, प्राणों से प्रियतम ।'
नारद ने कहा, 'मैं उसकी परीक्षा लूँगा' ।
हँसे विष्णु सुनकर यह, कहा कि 'ले सकते हो ।'
नारदजी चल दिये, पहुँचे भक्त के यहाँ,
देखा, हल जोत कर आया वह दुपहर को;
दरवाजे पहुँचकर रामजी का नाम लिया;
स्नान-भोजन करके, फिर चला गया काम पर ।
शाम को आया दरवाजे, फिर नाम लिया,
प्रात:काल चलते समय एक बार फिर उसने
मधुर नाम स्मरण किया ।
'बस केवल तीन बार' नारद चकरा गये ।
दिवा-रात्रि जपते हैं नाम ऋषि-मुनि लोग
किन्तु भगवान को किसान ही यह याद आया !
गये वे विष्णुलोक, बोले भगवान् से,
'देखो किसान को,
दिन भर में तीन बार नाम उसने लिया है ।'

बोले विष्णु 'नारदजी' !
आवश्यक दूसरा काम एक आया है,
तुम्हें छोड़कर कोई और नहीं कर सकता ।
साधारण विषय यह, बाद को विवाद होगा,
तब तक यह आवश्यक कार्य पूरा कीजिये,
तैल-पूर्ण पात्र यह लेकर,
प्रदक्षिणा कर आइए भूमण्डल की
ध्यान रहे सविशेष,
एक बूँद भी इससे तेल न गिरने पाए ।'
लेकर चले नारदजी, आज्ञा पर धृतलक्ष्य ।
एक बूँद तेल इस पात्र से गिरे नहीं ।
योगिराज जल्द ही
विश्व-पर्यटन करके लौटे वैकुण्ठ को ।
तेल एक बूँद भी उस पात्र से गिरा नहीं ।
उल्लास मन में भरा था यह सोचकर,
तेल का रहस्य एक अवगत होगा नया ।
नारद को देखकर विष्णु भगवान् ने
बैठाया स्नेह से कहा,
'बतलाओ पात्र लेकर जाते समय कितनी बार
नाम इष्ट का लिया ?'
'एक बार भी नहीं,

शंकित हृदय से कहा नारद ने विष्णु से,
'काम तुम्हारा ही था,
ध्यान उसीसे लगा, नाम फिर क्या लेता और' ?
विष्णु ने कहा, 'नारद' !
उस किसान का भी काम मेरा दिया हुआ है,
उत्तरदायित्व कई लदे हैं एक साथ,
सबको निभाता और काम करता हुआ,
नाम भी वह लेता है, इसी से है प्रियतम ।
नारद लज्जित हुए, कहा, 'यह सत्य है ।'

शब्दार्थ

मृत्युलोक - पृथ्वी, संसार । पुण्यश्लोक - पवित्र यश या कीर्त्तिवाला । प्राणों से प्रियतम - जीवन से भी प्यारा । स्मरण - याद । चकराना - हैरान होना, चकित होना । दिवा-रात्रि - दिन-रात । सविशेष - आवश्यक, जरूरी । तैलपूर्ण - तेल से भरा । प्रदक्षिणा- चक्कर लगाना । धृतलक्ष्य - लक्ष्य में लगा । पर्यटन- यात्रा । वैकुण्ठ - स्वर्ग । उल्लास- हर्ष । अवगत - मालूम होना । इष्ट - अभिलाषित, वांछित । उत्तरदायित्व - जिम्मेदारी । निभाना- पूरा करना । लज्जित - शर्मिन्दा ।

प्रश्न और अभ्यास

1. इन प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए ।

(क) भगवान विष्णु किसे और क्यों अपना श्रेष्ठ भक्त मानते हैं ?

(ख) नारदजी ने विष्णु से क्या सवाल किया और उसके उत्तर में विष्णु ने नारदजी को क्या करनेको कहा ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए ।

(क) नारदजी ने किससे सवाल किया ?

(ख) विष्णुजी ने नारद को क्या उत्तर दिया ?

(ग) नारद ने किसकी परीक्षा लेने की बात कही ?

(घ) किसान ने कब-कब भगवान का नाम स्मरण किया ?

(ङ) नारदजी किस बात से चकरा गये ?

(च) तैलपूर्ण पात्र लेकर नारदजी कहाँ गये ?

(छ) विष्णु ने नारदजी को किस बात पर ध्यान देने को कहा ?

(ज) नारदजी को अपने पास बुलाकर विष्णु ने क्या कहा ?

(झ) विश्व-पर्यटन के दौरान नारदजी ने कितनी बार विष्णु का नाम लिया था ?

(ञ) शंकित हृदय से नारद ने विष्णु से क्या कहा ?

(ट) विष्णु ने किसान को क्यों प्रियतम कहा ?

(ठ) नारदजी ने विष्णु की बात से लज्जित होकर क्या कहा ?

3. सही उत्तर चुनिए ।

(क) किसान ने एक दिन में कितनी बार भगवान का नाम-स्मरण किया ?

(i) चार

(ii) तीन

(iii) एक

(ख) विश्व-पर्यटन करके नारदजी कहाँ लौटे ?

(i) मर्त्यलोक

(ii) विष्णुलोक

(iii) पाताल लोक

(ग) योगिराज कौन हैं ?

(i) किसान

(ii) नारद

(iii) विष्णु

भाषा - ज्ञान

1. नीचे लिखे शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए ।

मृत्युलोक, दिवा, रात्रि, प्रातः, वैकुण्ठ

2. नीचे लिखे शब्दों के विलोम शब्द लिखिए ।

प्रधान, रात्रि, प्रातःकाल, आवश्यक, साधारण, उल्लास

3. विशेष रूप से ध्यान दीजिए कि हिन्दी में केवल दो लिंग होते हैं । क्लीव लिंग या नपुंसक लिंग होता ही नहीं । इसलिए निम्नलिखित शब्दों में से कौन-सा शब्द पुंलिंग का और कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग का है, बताइए ।

भक्त, किसान, दरवाजा, विवाद, आज्ञा, स्मरण, परीक्षा, नाम, बूँद

4. नारद ने कहा, 'मैं उसकी परीक्षा लूँगा' । इस वाक्य में 'लूँगा' क्रिया है, जिससे भविष्यत काल की सूचना मिलती है । निम्न वाक्यों का काल निर्णय कीजिए ।

(क) किसान शाम को घर लौटा ।

(ख) कुत्ता भौंक रहा है ।

(ग) मेरे पिताजी कल दिल्ली जाएँगे ।

(घ) यहाँ का दृश्य दर्शक को आकृष्ट करता है ।

(ङ) बुखार के कारण कल मैं स्कूल नहीं आ पाया ।

5. इन्हें क्या कहते हैं लिखिए ।

(क) जो खेती का काम करता है, वह है किसान ।

(ख) जो कपड़ा बुनने का काम करता है, वह है .... ।

(ग) जो रोगियों का इलाज करता है, वह है .... ।

(घ) जो हमारे पास चिट्ठियाँ पहुँचाता है, वह है .... ।

गृह कार्य

१. अपने प्रिय दोस्त के बारे में वर्णन कीजिए तथा यह बताइए कि वह क्यों प्रिय है ?

●

राहुल-जननी

मैथिली शरण गुप्त

कवि परिचय :

मैथिली शरण गुप्त का जन्म सन् 1886 ई. में झाँसी के चिरगाँव में हुआ था । उनके पिता सेठ रामचरणजी वैष्णव भक्त एवं अच्छे कवि थे । इसलिए राम-भक्ति गुप्तजी को पैतृक देन के रूप में मिली । बचपन से ही वे काव्य-रचना करने लगे । वे द्विवेदी-युग के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं । वे गांधीवादी और भक्त कवि हैं । उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति मिलती है । अपनी रचनाओं के जरिये उन्होंने जनता को अहिंसा, सत्याग्रह, राष्ट्र-प्रेम तथा मानवतावाद का संदेश दिया । इसलिए उन्हें 'राष्ट्रकवि' सम्मान से सम्मानित किया गया । आगरा विश्वविद्यालय तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने उन्हें डी. लिट. की मानद उपाधि प्रदान की । वे भारत के राष्ट्रपति के द्वारा मनोनीत राज्यसभा सांसद भी रहे । उनका निधन सन् 1964 ई. में हुआ ।

उनकी प्रमुख काव्य-रचनाएँ ये हैं : जयद्रथ-वध, भारत-भारती, पंचवटी, साकेत, यशोधरा, द्वापर, जयभारत, विष्णुप्रिया आदि ।

भाव-बोध :

ये दो पद 'यशोधरा' खंडकाव्य के 'राहुल-जननी' शीर्षक से लिये गये हैं । इनमें गुप्तजी ने यशोधरा के माता रूप और पत्नीरूप का उद्घाटन किया है ।

नेपाल राजकुमार गौतम मानव-जीवन के शाश्वत सत्य की खोज में क्षणभंगुर संसार को त्याग देते हैं । पत्नी यशोधरा और पुत्र राहुल को बिना जगाए और बिना कुछ

बताए रात को ही निकल जाते हैं । सुबह यशोधरा को यह पता चलता है । वह बहुत दु:खी होती है । कुछ देर बाद राहुल जाग पड़ता है और रोने लगता है । यशोधरा उसे चुप कराती हुई कहती है- 'रे अभागे ! तू अब क्यों रो रहा है ? चुप हो जा । उनके जाते वक्त अगर तू रोता तो वे मुझे सोती छोड़कर क्यों चले जाते ? हम दोनों ने तो सोकर उन्हें खो दिया । अब रोने से क्या फायदा ? राहुल को और समझाती हुई यशोधरा कहती है 'बेटे ! मेरे भाग्य में रोना तो लिखा है । मैं रोऊँगी । तेरे सारे कष्ट मिटाऊँगी । तू क्यों रोता है ? तू हँसा कर । हमारे जीवन में जो कुछ आएगा, उसे सहना ही पड़ेगा । हमारे सुख के दिन अवश्य लौटेंगे । अब मैं तुझे अपना दूध पिलाकर और सारी स्नेह-ममता देकर पालूँगी । तेरे पिता के लिए आँसू बहाऊँगी । तुम दोनों के प्रति मुझे समान न्याय करना होगा । इसलिए पतिव्रता नारी बनकर मैंने पति की तरह सारे सुख-भोग त्याग दिये हैं ।

दूसरे पद में गुप्तजी ने पति वियोगिनी यशोधरा की मानसिक दशा का चित्रण किया है । यशोधरा के जरिये भारतीय नारी-जीवन की सच्चाई उपस्थापित की है । यशोधरा अपने अतीत और वर्तमान की तुलना करती है और कहती है कि जो कल इस राजमहल की रानी बनी हुई थी, वह आज दासी भी कहाँ है ? अर्थात् यशोधरा अपने आपको दासी से भी पराधीन मानती है । नारी जीवन की यही वास्तविकता है कि आँखों में आँसू भरकर भी दूसरों के लिए कर्त्तव्य का सम्पादन करती चले । अंत में यशोधरा कहती है- 'हे मेरे शिशु संसार राहुल ! तू मेरा दूध पीकर पलता चल और हे मेरे प्रभु (पतिदेव) ! तुम तो मेरे आँसू के पात्र हो ! इसे तुम स्वीकार करो ।'

(1)

चुप रह, चुप रह, हाय अभागे !
रोता है अब, किसके आगे ?

तुझे देख पाता वे रोता,
मुझे छोड़ जाते क्यों सोता ?
अब क्या होगा ? तब कुछ होता,

सोकर हम खोकर ही जागे !
चुप रह, चुप रह, हाय अभागे !

बेटा, मैं तो हूँ रोने को;
तेरे सारे मल धोने को;
हँस तू, है सब कुछ होने को,

भाग्य आयेंगे फिर भी भागे,
चुप रह, चुप रह, हाय अभागे !
तुझको क्षीर पिलाकर लूँगी,
नयन-नीर ही उनको दूँगी,
पर क्या पक्षपातिनी हूँगी ?

मैंने अपने सब रस त्यागे ।
चुप रह, चुप रह, हाय अभागे ।

(2)

चेरी भी वह आज कहाँ, कल थी जो रानी;
दानी प्रभु ने दिया उसे क्यों मन यह मानी ?
अबला-जीवन, हाय ! तुम्हारी यही कहानी-
आँचल में है दूध और आँखों में पानी !

मेरा शिशु-संसार वह
दूध पिये, परिपुष्ट हो ।
पानी के ही पात्र तुम
प्रभो, रुष्ट या तुष्ट हो ।

शब्दार्थ

अभागे - भाग्यहीन । मल धोने - दुःख मिटाने । क्षीर - दूध । नयन-नीर - आँसू (दुःख) । पक्षपातिनी- किसी एक का समर्थन करनेवाली । रस-सुख - आराम । चेरी - नौकरानी, दासी । अबला - कमज़ोर या दुर्बल स्त्री । परिपुष्ट - हृष्टपुष्ट । रुष्ट - नाराज, कुपित । तुष्ट - खुश, सन्तुष्ट ।

प्रश्न और अभ्यास

1. इन प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) राहुल को चुप कराने के लिए यशोधरा क्या कहती है ?

(ख) अबला जीवन की कहानी कैसी है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

(क) यशोधरा किसे अभागा कहती है ?

(ख) 'मैं तो हूँ रोने को' - यहाँ 'मैं' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?

(ग) यशोधरा क्या धोने की बात करती है ?

(घ) 'नयन-नीर' का अर्थ क्या है ?

(ङ) 'दानी-प्रभु' किसके लिए कहा गया है ?

(च) यशोधरा को कौन छोड़कर चले जाते हैं ?

(छ) 'नयन-नीर' ही उनको दूँगी' - यहाँ यशोधरा नयन-नीर किसे देने की बात करती है ?

3. खाली स्थान भरिए :

(क) ...., हाय ! तुम्हारी यही कहानी ।

(ख) सोकर हम .... ही जागे ।

(ग) .... भी वह आज कहाँ, कल थी जो .... ।

(घ) मेरा .... वह, दूध पिये, परिपुष्ट हो ।

भाषा - ज्ञान

1. विपरीत शब्द लिखिए :

रोता, सोता, खोकर, अभागा, अबला, रुष्ट

2. 'दानी प्रभु' में 'प्रभु' संज्ञा है और 'दानी' विशेषण । इस प्रकार निम्न वाक्यों में से संज्ञा और विशेषण छाँटिए :

(क) काली गाय का दूध मीठा होता है ।

(ख) बड़े बाजार में भीड़ लगी रहती है ।

(ग) पिताजी ने मुझे दो उपहार दिये ।

(घ) ऊँचे पेड़ पर दो बंदर बैठे हैं ।

3. प्रस्तुत पाठ में से तुकान्त शब्दों को छाँटकर लिखिए :

जैसे : अभागे - आगे ।

4. इन शब्दों से वाक्य बनाइए :

भाग्य, नयन, पानी, प्रभु, संसार

गृह कार्य

1. आप की माँ रोते बच्चे को कैसे चुप कराती हैं ? - लिखिए ।

1. गुप्त जी की दूसरी कविताओं को पढ़िए ।

●

फिर महान बन

नरेन्द्र शर्मा

PYJBHC

कवि परिचय :

नरेन्द्र शर्मा का जन्म सन् 1913 ईस्वी को उत्तर प्रदेश के बुलंदर शहर जनपद के जहाँगीरपुर नामक गाँव में हुआ । सन् 1936 ईस्वी में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. पास किया । साहित्य-सृजन के प्रति उनकी पहले सी ही रुचि रही । छात्र-जीवन में ही 'भूलझूल' तथा 'कर्णफूल' प्रकाशित हुए । फिर उन्होंने स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लिया । जेल गए । कुछ दिनों तक अध्यापक हुए । फिर सिनेमा के लिए गीत लिखे । बाद में मुम्बाई आकाशवाणी केन्द्र में नियुक्त हुए । 1988 में आपका देहान्त हो गया । प्रमुख कविता संकलन हैं :- प्रभात फेरी, प्रवासी के गीत, प्रीति कथा, कामिनी, अग्नि शस्य, कदली वन, प्यासा निर्झर, उत्तरजय, बहुत रात गए आदि ।

नरेन्द्र शर्मा की कविता में मानव-प्रेम, प्रकृति-सौन्दर्य के सरल और सजीव चित्र मिलते हैं । जड़ वस्तुओं में मानवीय चेतना, करुणा की भावधारा बहती है । बाद में वे समाज के दु:ख-दर्द के प्रति आकृष्ट हुए और असुविधाओं को दूर-करने की आवाज उठाई । विद्रोह किया ।

शर्माजी की भाषा सरल, शुद्ध और भावगर्भक होती है ।

भाव-बोध :

मनुष्य अमृत की सन्तान है । अपनी महानता के कारण वह सबसे श्रेष्ठ प्राणी के रूप में परिचित है । लेकिन आज वह अपना कर्त्तव्य भूल गया है । अपने कर्त्तव्य पर सचेतन होने के लिए कवि ने इस कविता में सलाह दी है । मनुष्य को मनुष्यता का पाठ पढ़ाने के लिए, संसार को स्वर्ग बनाने के लिए यह कवि की चेतावनी है । कवि ने मनुष्य को फिर महान बनने की प्रेरणा दी है ।

फिर महान बन, मनुष्य !
फिर महान बन ।
मन मिला अपार प्रेम से भरा तुझे,
इसलिए कि प्यास जीव-मात्र की बुझे,
विश्व है तृषित, मनुष्य, अब न बन कृपण ।
फिर महान बन ।
शत्रु को न कर सके क्षमा प्रदान जो,
जीत क्यों उसे न हार के समान हो ?
शूल क्यों न वक्ष पर बनें विजय-सुमन !
फिर महान बन ।
दुष्ट हार मानते न दुष्ट नेम से,
पाप से घृणा महान है, न प्रेम से
दर्प-शक्ति पर सदैव गर्व कर न, मन ।
फिर महान बन ।

शब्दार्थ

महान - श्रेष्ठ । अपार - असीम । प्यास - तृषा । तृषित - प्यासा । कृपण - कंजूस । क्षमा - माफी । जीवमात्र - प्राणीमात्र । जीत - विजय । हार - पराजय । विजय सुमन - जीत के फूल । शूल - काँटा, पीड़ा । सुमन - पुष्प, फूल, प्रसून, कुसुम । घृणा-नफरत । सदैव - सदा, सर्वदा । गर्व - घमंड, अभिमान । वक्ष - हृदय । नेम - नियम, कायदा, दस्तूर, रीति । दर्पशक्ति - घमण्ड ।

प्रश्न और अभ्यास

1. इन प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) मनुष्य को किस प्रकार का मन मिला है ? उससे वह क्या कर सकता है ?

(ख) महान मनुष्य किसे कहते हैं ?

(ग) मनुष्य को महान बनने के लिए क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए ?

(घ) मनुष्य को महान बनने के लिए कवि ने क्या प्रेरणा दी है ?

(ङ) किसी की जीत हार के समान क्यों होनी चाहिए ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

(क) कवि ने मनुष्य से क्या बनने को कहा ?

(ख) मनुष्य को किस प्रकार मन मिला है ?

(ग) विश्व आज क्या है ?

(घ) कवि मनुष्य से क्या न बनने को कहा है ?

(ङ) जो शत्रु को क्षमा प्रदान नहीं करता, उसकी जीत किसके समान है ?

(च) विजय का सुमन क्या बनता है ?

(छ) किस से घृणा महान है ?

(ज) किस पर सदैव गर्व न करना चाहिए ?

(झ) 'फिर महान बन' कविता के कवि का नाम क्या है ?

(ञ) 'फिर महान बन' कविता का मूल भाव क्या है ?

3. पाठ के आधार पर निम्नलिखित रिक्त स्थानों को भरिये :

फिर महान ________ ।

शत्रु को न ________ सके ________ प्रदान जो,

जीत क्यों उसे न ________ के समान हो ?

दुष्ट ________ मानते न दुष्ट ________ से,

________ घृणा महान ________ न ________ से ।

________ पर सदैव गर्व करना न ________ ।

भाषा - ज्ञान

1. उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्दों के समानार्थक शब्द लिखिए :

उदाहरण :

महान - विशिष्ट	विश्व ....
सुमन - पुष्प	कृपण ....
मनुष्य	क्षमा ....
अपार	शत्रु ....
प्रेम	हार ....
प्यास	भूल ....
जीव	दर्प ....
वक्ष	दुष्ट ....
नेम	गर्व ....

2. उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्दों के विलोम/विपरीत शब्द लिखिए :

उदाहरण :

प्रेम - घृणा	क्षमा ....
शत्रु - मित्र	प्रदान ....
महान	जीत ....
कृपण	समान ....
मनुष्य	विजय ....
दुष्ट	पाप ....

3. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए :

उदाहरण :

मनुष्य	-	मनुष्य
तुझे	-	________
शत्रु	-	________
जीव	-	________
कवि	-	________

4. आप भी एक कविता लिखने की कोशिश करें :

●

मेरा नया बचपन

सुभद्रा कुमारी चौहान

कवि परिचय :

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म सन् 1903 ई. में नागपंचमी के दिन प्रयाग निहलपुर मुहल में हुआ । उनके पिता थे ठाकुर रामनाथ सिंह । उनकी देखरेख में सुभद्राकुमारी की प्रारंभिक शिक्षा प्रयाग में हुई । सन् 1919 ई. में खंडवा निवासी ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान से उनका विवाह हुआ था । राष्ट्रीय आन्दोलन में उद्‌बोधित होकर सुभद्राकुमारी अपने पति के साथ सत्याग्रह में हिस्सा लेने लगीं । इसलिए कई बार उन्हें जेल जाना पड़ा । देश स्वतंत्र होने के बाद वे मध्यप्रदेश विधानसभा की सदस्या चुनी गईं । साहित्यिक और राजनीतिक क्षेत्रों में उन्हें राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी से विशेष प्रोत्साहन मिला था । 12 फरवरी 1948 ई. को मोटर दुर्घटना से उनका देहांत हो गया ।

सुभद्राकुमारी कवयित्री और कहानीकार-दोनों ही थीं । अपनी कविता में राष्ट्रप्रेम की ओजस्विता और मानवीय भावनाओं का सहज रूप बड़ी ही सुन्दरता के साथ व्यक्त होता है । 'झाँसी की रानी' कविता किसी समय हिन्दी पाठकों की जवानों पर गुँजती रहती थी । इनकी रचनाएँ मुकुल, बिखरे, मोती, उन्मादिनी, त्रिधाराएँ, सभा का खेल और 'सीधे-साधे चित्र' हैं । इनमें 'मुकुल' उनकी 39 कविताओं का संग्रह है । इसी कविता- पुस्तक पर उन्हें पुरस्कार मिला है ।

भाव-बोध :

'मेरा नया बचपन' कविता चौहानजी के बचपन-संबंधी मनोभावों की एक झलक है । राष्ट्रीय कविताओं के अतिरिक्त सुभद्रा की वात्सल्य संबंधी कुछ कविताएँ भी अपनी स्वाभाविकता में अप्रतिम हैं । 'मेरा नया बचपन' कविता में कवयित्री ने अपने बचपन की

याद की है । इसमें उनका मातृहृदय सजग हो उठा है । बचपन की सरल, मधुर स्मृतियाँ आनन्द का अतुलित भंडार होती हैं । कवयित्री ने अपनी बिटिया के बचपन की अठखेलियों और शरारतों में अपने ही बचपन की झलक देखी । उन्हें लगा कि उनका बचपन फिर से लौट आया है । वस्तुत: नारी-हृदय मातृत्व पाकर ही गौरवान्वित होता है । सुभद्राजी पूर्ण माता हैं ।

बार-बार आती है मुझको
मधुर याद बचपन तेरी,
गया, ले गया तू, जीवन की,
सबसे मस्त खुशी मेरी ।

चिंता रहित खेलना खाना,
वह फिरना निर्भय स्वच्छंद,
कैसे भूला जा सकता है,
बचपन का अतुलित आनंद ।

रोना और मचल जाना भी,
क्या आनंद दिखलाते थे,
बड़े-बड़े मोती-से आँसू,
जयमाला पहनाते थे ।

मैं रोई, माँ काम छोड़कर
आई, मुझको उठा लिया,
झाड़-पोंछकर चूम-चूमकर,
गीले गालों को सुखा दिया ।

आ जा बचपन ! एक बार फिर
दे दे अपनी निर्मल शांति,
व्याकुल व्यथा मिटाने वाली
वह अपनी प्राकृत विश्रांति ।

वह भोली-सी मधुर सरलता
वह प्यारा जीवन निष्पाप,
क्या फिर आकर मिटा सकेगा
तू मेरे मन का संताप ?

मैं बचपन को बुला रही थी,
बोल उठी बिटिया मेरी,
नंदन-वन-सी फूल उठी,
यह छोटी-सी कुटिया मेरी ।

माँ ओ ! कहकर बुला रही थी,
मिट्टी खाकर आई थी,
कुछ मुँह में, कुछ लिए हाथ में,
मुझे खिलाने आई थी ।

मैंने पूछा-यह क्या लाई ?
बोल उठी वह - माँ खाओ,
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से,
मैंने कहा - तुम ही खाओ ।

पाया मैंने बचपन फिर से
बचपन बेटी बन आया,
उसकी मंजुल मूर्त्ति देखकर,
मुझमें नव-जीवन आया ।

> **मैं भी उसके साथ खेलती,**
> **खाती हूँ, तुतलाती हूँ,**
> **मिलकर उसके साथ स्वयं,**
> **मैं भी बच्ची बन जाती हूँ ।**

जिसे खोजती थी बरसों से,
अब जाकर उसको पाया,
भाग गया था मुझे छोड़कर,
वह बचपन फिर से आया ।

शब्दार्थ

याद - स्मरण । मस्त - प्रसन्न, आनंदित । निर्भय - बिना डर के । चिंता रहित - चिंता शून्य । स्वच्छंद- आज़ाद, स्वाधीन, स्वतंत्र । अतुलित - अतुलनीय, अपार, बेजोड़ । मचल जाना - आग्रह, हठ करना । आँसू - अश्रु । गीला - भीगा हुआ । व्याकुल - बेचैन । प्राकृत विश्रांति - स्वाभाविक सुख चैन । निष्पाप - पापरहित, निष्कलंक । संताप - गहरी पीड़ा, दु:ख । नंदनवन - देवताओं का वन । कुटिया - कुटीर, झोंपड़ी । मिट्टी - धूलि, भस्म । प्रफुल्लित - बहुत खुश, प्रसन्न । मंजुल - सुन्दर, मन को लुभानेवाली । नव-जीवन - नया जीवन । तुतलाना - तुतलाकर बोलना । स्वयं - खुद । बरसों - सालों ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) कवयित्री ने बचपन को 'अतुलित आनंद देनेवाले' क्यों कहा है ?

(ख) बचपन के बारे में कवयित्री ने क्या वर्णन किया है ?

(ग) बच्ची के रोने पर माँ ने उसे कैसे चुप कराया ?

(घ) कवयित्री बचपन को क्यों बार-बार बुलाती हैं ?

(ङ) बचपन को बुलाते समय क्या हुआ ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

(क) 'मेरा नया बचपन' कविता किसने लिखी है ?

(ख) कवयित्री को बार-बार किसकी याद आती है ?

(ग) किस समय का अतुलित आनंद भूला नहीं जा सकता है ?

(घ) कवयित्री को बचपन में किस प्रकार की जयमाला पहनाते थे ?

(ङ) माँ ने गीले गालों को कैसे सुखा दिया ?

(च) कवयित्री किसलिए बचपन को फिर एक बार बुलाती है ?

(छ) कवयित्री किसलिए शंका प्रकट करती है ?

(ज) कवयित्री की छोटी-सी कुटिया कैसे नन्दन वन-सी फूल उठी ?

(झ) कवयित्री की बिटिया क्यों माँ के पास आई थी ?

(ञ) कवयित्री ने अपना खोया बचपन किस प्रकार पाया ?

(ट) कवयित्री किसे बरसों से खोजती थी ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए :

(क) कवयित्री को बार-बार किसकी याद आती है ?

(i) बुढ़ापा

(ii) बचपन

(iii) शैशव

(iv) यौवन

(ख) बचपन का कौन-सा आनंद भुला नहीं जा सकता ?

(i) सुख

(ii) अप्रतिम

(iii) अतुलित

(iv) असीम

(ग) जब बच्ची रोती थी तब कौन काम छोड़कर आ जाती थी ?

(i) माँ

(ii) बहन

(iii) नानी

(iv) आया

(घ) बिटिया क्या खाकर आई थी ?

(i) रोटी

(ii) पान

(iii) मिट्टी

(iv) मिठाई

(ङ) बचपन क्या बनकर कवयित्री को फिर से प्राप्त हुआ ?

(i) बिल्ली

(ii) कुत्ता

(iii) बेटा

(iv) बेटी

भाषा - ज्ञान

1. इन विशेषण तथा संज्ञा शब्दों को जोड़िए :

विशेषण	संज्ञा	विशेषण	संज्ञा
मधुर	विश्रान्ति	मस्त	कुटिया
व्याकुल	आँसू	मंजुल	खुशी
मोती-से	हृदय	छोटी-सी	आनंद
प्राकृत	स्मृति	अतुलित	मूर्त्ति

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए ।

खुशी, हँसना, मधुर, जीवन, निश्चित, निर्भय, बड़े, सूखा, भयभीत, कुटिया, नव, प्यारा, पाप, निष्पाप, सरलता, बचपन, निर्मल, अपना, पाया, हर्ष ।

3. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

निर्भय, स्वच्छन्द, जय, माँ, व्यथा, फूल, कुटिया, वन

4. निर्देशानुसार निम्नलिखित वाक्यों को बदलिए ।

(क) तू गया, तू ले गया । (भविष्यत काल में)

(ख) मेरे मन का दु:ख वह आकर मिटाएगा । (भूतकाल में)

(ग) माँ काम छोड़कर आई और मुझे गोद में उठा लिया । (वर्त्तमान काल में)

(घ) मैं बचपन को बुला रही थी । (वर्तमान काल में)

(ङ) मुझे खिलाने आई थी । (भविष्यत काल में)

गृहकार्य :

अपने बचपन की किसी एक रोचक घटना अपने साथियों को सुनाइए ।

●

साथी ! दु:ख से घबराता है ?

गोपालदास 'नीरज'

कवि परिचय :

गोपालदास 'नीरज' का जन्म पुरावली, जिला इटावा (उत्तर प्रदेश) में सन् 1926 ई. में हुआ । बचपन में ही उनके पिता चल बसे । इसलिए 'नीरज' ने अपनी चेष्टा से पढ़ा । एम.ए. किया । फिर नौकरी की । अपने को बनाया । 'संघर्ष', 'विभावरी', 'नीरज की पाती', 'प्राणगीत', 'दो गीत', 'मुक्तावली', 'दर्द दिया है', 'बादर बरस गयो' आदि 'नीरज' के लोकप्रिय काव्य-संग्रह हैं । 'नीरज' के गीतों में जीवन के सहज अनुभव अभिव्यक्त हुए हैं । इसलिए वे सब के मन को छू पाते हैं । गीत गाए जाते हैं तो और भी सरस होते हैं ।

भाव-बोध :

इस कविता में कवि अपने साथी को दु:ख से न डरने की सलाह देता है । न डरने से दु:ख भी सुख बन जाता है । मानव-जीवन में दु:ख ज्यादा होता है । सुख बहुत कम । तो फिर दु:ख से डरने से, रोने-चीखने से दु:ख दूर नहीं होता । दु:ख से लड़ना सही रास्ता है । दु:ख के बाद सुख आएगा । ज़रूर आएगा, क्योंकि दु:ख सर्वदा नहीं रह सकता । दु:ख भोगते हुए कोई मर जाय तो भी कोई डर नहीं । डरने से वह दु:ख से बच तो नहीं सकता न ! जीवन में दु:ख होने के कारण हम सब कर्मतत्पर बने रहते हैं । दु:ख पर विजय प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं । जिस प्रकार जलती आग में जलने के कारण लोहे में कालिमा की जगह लालिमा आ जाती है, उसी प्रकार मानव-जीवन में दु:ख रूपी संघर्ष के कारण व्यक्तित्व का उत्कर्ष प्रतिपादित होता है । इसलिए कवि 'नीरज' का यह संदेश है कि दु:ख को बुरी चीज़ न मानकर मुक्ति का मार्ग मानना चाहिए ।

साथी ! दु:ख से घबराता है ?
दु:ख ही कठिन मुक्ति का बंधन,
दु:ख ही प्रबल परीक्षा का क्षण,
दु:ख से हार गया जो मानव, वह क्या मानव कहलाता है ?

साथी ! दु:ख से घबराता है ?
जीवन के लम्बे पथ पर जब
सुख दु:ख चलते साथ-साथ तब
सुख पीछे रह जाया करता दु:ख ही मंजिल तक जाता है ।

साथी ! दु:ख से घबराता है ?
दु:ख जीवन में करता हलचल,
वह मन की दुर्बलता केवल,
दु:ख को यदि मान न तू तो दु:ख ही फिर सुख बन जाता है ।

साथी ! दु:ख से घबराता है ?
पथ में शूल बिछे तो क्या चल
पथ में आग जली तो क्या जल
जलती ज्वाला में जलकर ही लोहा लाल निकल आता है ।

साथी ! दु:ख से घबराता है ?
धन्यवाद दो उसको जिसने
दिए तुझे दु:ख के तो सपने,
एक समय है जब सुख ही क्या ! दु:ख भी साथ न दे पाता है ।
साथी ! दु:ख से घबराता है ?

शब्दार्थ

मुक्ति - आज़ादी, स्वतंत्रता । प्रबल - बड़ा, भारी, प्रचंड । क्षण - घड़ी, पल, वक्त । मंजिल - लक्ष्य । हलचल - हिलने-डोलने की क्रिया या भाव । दुर्बलता - कमज़ोरी । शूल - काँटा । ज्वाला - अग्नि शिखा, लौ, लपट ।

प्रश्न और अभ्यास

1. इन प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) कवि दु:ख से न घबराने को क्यों कहते हैं ?

(ख) इस कविता का संदेश क्या है - समझाइए ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

(क) कवि ने मुक्ति का बंधन किसे माना है ?

(ख) जीवन के लम्बे पथ पर कौन साथ-साथ चलते हैं ?

(ग) जीवन की मंजिल तक कौन जाता है ?

(घ) जीवन में हलचल कौन लाता है ?

(ङ) जलती ज्वाला में जलकर क्या लाल बन निकलता है ?

(च) कवि ने किसे धन्यवाद देने को कहा है ?

(छ) दु:ख कब सुख बन जाता है ?

3. पंक्तियाँ पूरा कीजिए :

(क) जीवन के ....

सुख दु:ख चलते साथ-साथ तब

(ख) दु:ख जीवन में करता ....,

वह मन की .... केवल ।

(ग) जलती .... में जलकर ही .... लाल निकल आता है ।

(घ) एक समय है जब .... ही क्या !

.... भी साथ न दे पाता है ।

4. सही अर्थ चुनिए :

(क) प्रबल परीक्षा का क्षण क्या है ?

(i) सुख

(ii) दु:ख

(iii) आनंद

(ख) किसमें जलकर ही लोहा लाल निकल आता है ?

(i) दु:ख में

(ii) सुख में

(iii) जलती ज्वाला में

भाषा - ज्ञान

1. विपरीत अर्थवाले शब्द लिखिए :

कठिन :________ दु:ख :________

बंधन :________ मुक्ति :________

दुर्बलता :________ हार :________

2. इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

परीक्षा, समय, मंजिल, बंधन

3. लिंग बताइए :

लोहा, आग, हार, ज्वाला, पथ, दु:ख

4. बहुवचन रूप लिखिए :

एक :_________ सपना :_________

परीक्षा :_________ मंजिल :_________

5. 'जीवन के लम्बे पथ पर जब'... में 'पथ' संज्ञा है और 'लम्बे' विशेषण है जिससे पथ की लम्बाई सूचित हुई है । निम्न वाक्यों में विशेषणों को रेखांकित कीजिए :

(क) कोयल की आवाज़ सुरीली होती है ।

(ख) मुझे पाँच रुपये चाहिए ।

(ग) हमें गरीब जनता की सेवा करनी चाहिए ।

(घ) रमेश एक मेधावी छात्र है ।

गृहकार्य :

1. अपने जीवन में आये दु:ख के क्षण का वर्णन कीजिए ।
2. इस कविता को कंठस्थ कीजिए ।

●

श्रम की प्रतिष्ठा

आचार्य विनोबा भावे

लेखक परिचय :

आचार्य विनोबा भावे का पूरा नाम विनायक राव भावे है । उनका जन्म 11 सितम्बर, सन् 1895 को महाराष्ट्र के गंगोदा गांव में हुआ था । बचपन से वे बड़े मेधावी थे; गणित और संस्कृत जैसे विषयों पर उनका पूरा अधिकार था । अपनी माता की प्रेरणा से वे आजीवन अविवाहित रहे और देश की सेवा करते रहे ।

आचार्य विनोबा का व्यक्तित्व महात्मा गांधी के आदर्शों से भी प्रभावित था; अत: उन्होंने सत्य, सेवा और अहिंसा के रास्ते को अपनाकर बापू के आदर्शों तथा सिद्धान्तों को आगे बढ़ाया । 'सर्वोदय' को साकार करना उनका स्वप्न था । महात्मा गांधी की मौत के बाद विनोबाजी ने देश-भर पद-यात्रा की और भूदान, ग्राम-दान तथा संपत्ति-दान के द्वारा देश में एक सकारात्मक क्रान्ति लानेका प्रयत्न किया । भारतीय दर्शन पर उनकी गहरी आस्था थी ।

विनोबाजी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानते हुए इसके प्रति अपना गहरा प्रेम प्रकट किया । वे अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे; पर उनकी अधिकांश पुस्तकें हिन्दी में ही हैं । इनकी महत्त्वपूर्ण पुस्तकें हैं- गीता प्रवचन, सर्वोदय विचार, विनोबा के विचार, स्वराज-शास्त्र, साहित्यिकों से, भूदान-यज्ञ, गांव सुखी हम सुखी, शान्ति-यात्रा, भूदान-गंगा, सर्वोदय-यात्रा, जमाने की मांगें, जीवन और शिक्षण आदि ।

विचार विंदु :

'श्रम की प्रतिष्ठा' निबंध में विनोबाजी ने श्रम के महत्त्व पर प्रकाश डाला है । उनका विचार है कि प्रत्येक व्यक्ति को कुछ-न-कुछ श्रम करना चाहिए । देश का विकास तभी

हो सकता है जब इसमें समूचे नागरिकों का योगदान हो । कर्मयोग की महत्ता पर बल देते हुए निबंधकार ने समाज के सभी वर्ग के लोगों के श्रम करने पर आग्रह किया है । विनोबाजी का विचार है कि जो अपने पसीने से रोटी कमाता है, वह पाप-कर्मों से कोसों भागता है । शारीरिक श्रम और दिमागी काम का मूल्य भी समान होना चाहिए । श्रमिक को शेषनाग सिद्ध करते हुए निबंधकार ने रामायण की सीता और महाभारत के श्रीकृष्ण का उदाहरण देकर देश के सर्वांगीण विकास हेतु श्रम की महत्ता स्थापित की है ।

यह पृथ्वी शेषनाग के मस्तक पर स्थित है । अगर शेषनाग का आधार टूट जाए तो पृथ्वी स्थिर नहीं रह सकेगी, यह ज़र्रा-ज़र्रा हो जायेगी । हमने सोचा-यह शेषनाग कौन है ? ध्यान में आया, दिन भर शरीर-श्रम करने वाले मज़दूर, जो किस्म-किस्म की पैदावार करते हैं, वे ही ये शेषनाग हैं । सबका आधार उन मज़दूरों पर है, इसलिए भगवान ने मज़दूरों को कर्मयोगी कहा है । लेकिन सिर्फ़ कर्म करने से कोई कर्मयोगी नहीं होता । हिन्दुस्तान में कुछ मज़दूर खेतों पर काम करते हैं, कुछ रेलवे में काम करते हैं, कुछ कारखानों में काम करते हैं । दिन भर मज़दूरी करते हैं और अपने पसीने से रोटी कमाते हैं । जो शख्स पसीने से रोटी कमाता है, वह धर्म-पुरुष हो जाता है । उसके जीवन में पाप का आसानी से प्रवेश नहीं हो सकता । दिन भर काम कर लिया तो रात को गहरी नींद आती है । न दिन में पाप-कर्म करने के लिए समय मिलता है, न रात को कुछ सूझ सकता है; क्योंकि थका-माँदा शरीर आराम चाहता है । उसे नींद की ज़रूरत होती है । जिस जीवन में पाप-चिंतन की गुंजाइश ही न हो उसे धार्मिक जीवन होना चाहिए ।

पर ऐसा अनुभव नहीं हो रहा है । अनुभव तो यह है कि जो काम नहीं करते उनके जीवन में तो पाप है ही, पर उन पापों ने मज़दूरों के जीवन में प्रवेश कर लिया है । कई प्रकार के व्यसन उनमें होते हैं । यानी केवल श्रम करने से कोई कर्मयोगी नही होता । हाँ, जो श्रम टालता है, वह तो कर्मयोगी हो ही नहीं सकता । उसके जीवन में पाप है तो आश्चर्य नहीं । क्योंकि उसके पास समय फाज़िल पड़ा है । जहाँ समय फाज़िल पड़ा है, वहाँ

शैतान का काम शुरू होता है । इसलिए फुरसती लोगों के जीवन में पाप दिखता है तो आश्चर्य नहीं । पर मज़दूरी करने वाले के जीवन में पाप दिखता है तो सोचना चाहिए कि ऐसा क्यों होता है । ऐसा इसलिए होता है कि वे कर्म को पूजा नहीं समझते । कर्म लाचारी से करना पड़ता है, इसलिए करते हैं । वे अगर काम से मुक्त हो सकें तो बहुत जल्दी राजी हो जायेंगे । सच्चे कर्मयोगी की यह हालत नहीं होती ।

आज देहाती लोग भी कहते हैं कि हमारे बच्चों को तालीम मिलनी चाहिए । तालीम किसलिए मिलनी चाहिए ? इसलिए नहीं कि लड़का ज्ञानी बनेगा, धर्म-ग्रन्थ पढ़ सकेगा और जीवन में हर काम विचारपूर्वक करेगा । पर इसलिए कि लड़के को नौकरी मिलेगी और हम जैसे दिन भर खटते हैं, वैसे उसे खटना न पड़ेगा, मज़दूर ऐसा सोचते हैं । काम के प्रति ऐसी घृणा मज़दूरों में है । काम न करने वालों में तो है ही ।

दिमागी काम करने वाले लोग मज़दूरों को नीच समझते हैं । थोड़ा-सा काम लेने के लिए जितनी मज़दूरी देनी पड़ेगा उतनी देंगे, पर ज़्यादा से ज़्यादा काम लेंगे । ऐसी वृत्ति ही बन गई है । यानी उन्हें तो काम से नफ़रत है ही, मज़दूर को भी काम से नफ़रत है । वह मज़दूरी तो करता है पर उसमें उसे गौरव नहीं लगता ।

रामायण में भी एक कहानी है । अच्छी है । सुनने लायक है । रामजी का वनवास हुआ तो सीताजी ने कहा- मैं भी जाऊँगी । उसे आदत नहीं थी ऐसे जीवन की, पर उसने निश्चय किया था कि जहाँ रामजी, वहाँ मैं । पर जब कौशल्या ने सुना तो कहा, ''सीता का जाना कैसे होगा ? मैंने तो उसे दीप की बाती भी जलाने नहीं दी ।'' याने यहाँ भी काम की प्रतिष्ठा मानी नहीं गयी । इसमें अच्छाई भी है कि ससुर के घर लड़की गयी तो उसे बेटी समान माना, पर मेहनत को हीन माना गया, वह इसमें दीखता है ।

धर्मराज ने राजसूय यज्ञ किया था । कृष्ण भी वहाँ गए थे । कहने लगे, ''मुझे भी काम दो ।'' धर्मराज ने कहा, ''आपको क्या काम दें । आप तो हमारे लिए पूज्य हैं, आदरणीय हैं । आपके लायक हमारे पास कोई काम नहीं है ।'' भगवान् ने कहा, ''आदरणीय हैं तो क्या नालायक हैं ! हम काम कर सकते हैं ।'' तो धर्मराज ने कहा, ''आप ही अपना काम ढूँढ़ लीजिए ।'' भगवान् ने काम लिया जूठी पत्तलें उठाने का और पोंछा लगाने का ।

ज्ञानी तो खा सकते हैं और आशीर्वाद दे सकते हैं; काम नहीं कर सकते । अगर कोई सवेरे उठकर पीसता है तो वह ज्ञानी नहीं, मज़दूर कहलायेगा । ज्ञानी को, योगी को काम नहीं करना चाहिए । बूढ़ों को काम से मुक्त रहना ही चाहिए । बूढ़ों को काम देना निष्ठुरता मानी जायेगी । यानी बूढ़ा, बच्चा, योगी, ज्ञानी, व्यापारी, वकील, अध्यापक, विद्यार्थी, किसी को काम नहीं करना चाहिए । इतना बेकार वर्ग खड़ा हो जायेगा तो बेकारी बढ़ेगी । अगर ऐसा होता कि जो काम नहीं करता, वह खाता भी नहीं, तो ठीक था; पर वह तो अधिक खाने को माँगता है । ऐसी समाज-रचना जहाँ हुई है वहाँ मज़दूर समझते हैं कि हमें काम करने से छुट्टी मिले तो अच्छा होगा । ऐसा समाज जहाँ लाचारी से काम करता है, तो उसमें कर्मयोगी हो ही नहीं सकते । जो काम टालते हैं, जो काम नहीं करते हैं, उनका जीवन धार्मिक होता ही नहीं । इस कारण अपने समाज में श्रम की प्रतिष्ठा नहीं हैं ।

काम नहीं करते, इसका कारण यह है कि जो दिमागी काम करते हैं, उन्होंने दिमागी काम की महत्ता इतनी बढ़ा दी है कि उसे हज़ार रुपया देना ही उचित मानेंगे और श्रम करने वाले को कम से कम जितना दे सकेंगे उतना देने की कोशिश करेंगे । शरीर-श्रम की प्रतिष्ठा न मानो; पर महात्मा गांधी तो दिमागी काम करते थे, फिर भी थोड़ा-सा समय निकालकर दिन में सूत कात ही लेते थे । काम की इज्जत करनी चाहिए । अगर हम काम की इज़्ज़त नहीं करते तो बड़ा भारी धर्म-कार्य खोते हैं- ऐसा समझना चाहिए । यह तो एक

बात कि कुछ दिमागी काम ज्यादा करेंगे और कुछ दिमागी काम कम करेंगे, पर श्रम करने वालों का भी दिमाग है और दिमागी काम करने वालों को भी हाथ दिये हैं, तो दोनों को काम करना चाहिए । दोनों की इज़्ज़त बढ़ेगी, प्रतिष्ठा बढ़ेगी ।

दिमागी काम का और श्रम का मूल्य कम-ज़्यादा रखा गया, यह ठीक नहीं है । पहले तो ऐसी व्यवस्था नहीं थी । ब्राह्मण जो ज्ञानी होता था, पढ़ाता था । वह सिर्फ धोती और खाने का अधिकारी था, वह अपरिग्रही माना गया । आज तो जो भी विद्या पढ़ाता है, वह उसका मूल्य माँगता है । हम विद्या बेचने लगे हैं । यह गलत है । 'कर्म-योग' की महिमा, श्रम की प्रतिष्ठा कायम करनी है तो कीमत में अधिक फर्क नहीं करना चाहिए ।

शरीर-श्रम करने वाले को हम नीच मानते हैं । उसे किसी प्रकार की छुट्टियाँ नहीं देते । सफाई कर्मचारी को अगर एक दिन की भी छुट्टी दें तो सारा शहर गन्दा हो जाए । इतना जो उपकारी है, उसे हम नीचा मानते हैं । उसे साफ रहने के लिए साबुन आदि भी नहीं देते । न उसे इज़्ज़त है, न प्रतिष्ठा है, न सम्मान है । मेहतर माने क्या ? मेहतर माने तो- 'महत्तर' । ऐसा जो महत्तर है उसे हमने नीच माना !

इसलिए दो बातें होनी चाहिए । हर एक को थोड़ा-थोड़ा श्रम करना ही चाहिए । अगर हम बिना काम किए खाते हैं तो हमारा जीवन पापी बनता है । दूसरी चीज़, कामों का मूल्य समान होना चाहिए । जब यह होगा तब श्रम की प्रतिष्ठा होगी ।

शब्दार्थ

शेषनाग - पुराणानुसार सहस्त्र फनों के सर्पराज जिनके फनों पर पृथ्वी ठहरी है । जर्रा-जर्रा - अणु-अणु । किस्म-किस्म - भाँति-भाँति । पैदावार - ऊपज, फसल । कर्मयोगी

- जो कर्म को योग मानता हो, मेहनती । शख्स - व्यक्ति, जन । व्यसन - किसी भी प्रकार का शौक, बुरी आदत । फाज़िल - आवश्यकता से अधिक । राजसूय-यज्ञ - एक यज्ञ जिसके करने का अधिकार केवल ऐसे राजा को होता है, जो सम्राट पद का अधिकारी हो । अपरिग्रही - आवश्यक धन से अधिक का त्याग करनेवाला व्यक्ति । मेहतर - एक जाति जिसका काम मल-मूत्र आदि उठाना है (भंगी), श्रेष्ठ व्यक्ति ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए ।

(क) कर्मयोगी होने पर कौन-सा फायदा मिलता है ?

(ख) फुरसती लोगों को कर्मयोगी क्यों कहा नहीं जा सकता ?

(ग) देहाती लोग अपने बच्चों को तालीम देनेकी बात क्यों करते हैं ?

(घ) भगवान् कृष्ण ने श्रम का आदर कैसे किया ?

(ङ) ज्ञानी और मजदूर में क्या फर्क होता है ?

(च) शारीरिक और दिमागी श्रम की प्रतिष्ठा कैसे बढ़ सकती है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए ।

(क) शेषनाग किसे कहा गया है ?

(ख) कौन धर्म-पुरुष हो जाता है ?

(ग) किसके जीवन में पाप का आसानी से प्रवेश नहीं हो सकता ?

(घ) किसे कर्मयोगी कहा जा सकता है ?

(ङ) फुरसती लोगों के जीवन में पाप क्यों दीखता है ?

(च) मजदूरों को नीच कौन समझता है ?

(छ) किसने कहा कि सीता को दीप की बाती भी जलाने नहीं आती ?

(ज) कृष्ण ने धर्मराज से क्या कहा ?

(झ) ज्ञानी क्या नहीं कर सकते ?

(ञ) कौन मजदूर कहलाएगा ?

(ट) किसका जीवन धार्मिक नहीं होता ?

(ठ) हम काम की इज्जत नहीं करते तो कौन-सा कार्य खोते हैं ?

(ड) ब्राह्मण को अपरिग्रही क्यों माना गया था ?

(ढ) कब श्रम की प्रतिष्ठा होगी ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक शब्द में दीजिए ।

(क) यह पृथ्वी किसके मस्तक पर स्थित है ?

(ख) भगवान् ने किसे कर्मयोगी कहा है ?

(ग) अपने पसीने से कौन रोटी कमाता है ?

(घ) किसे कर्मयोगी कहा नहीं जा सकता ?

(ङ) जहां समय फाज़िल पड़ा होता है, वहां किसका काम शुरू हो जाता है ?

(च) किन-किन लोगों के जीवन में पाप दिखता है ?

(छ) कौन कहता है कि उनके बच्चों को तालीम मिलनी चाहिए ?

(ज) राजसूय यज्ञ किसने किया था ?

(झ) कौन-से श्रम की प्रतिष्ठा मानी गयी है ?

(ञ) दिमागी काम कौन करता था ?

(ट) अपरिग्रही किसे माना गया था ?

(ठ) बिना काम किये हमारा जीवन कैसा बनता है ?

(ड) किसका मूल्य समान होना चाहिए ?

4. निम्नलिखित अवतरणों का आशय स्पष्ट कीजिए ।

(क) लेकिन सिर्फ कर्म करने से कोई कर्मयोगी नहीं होता ।

(ख) जहाँ समय फाजिल पड़ा है, वहाँ शैतान का काम शुरू हो जाता है ।

(ग) ज्ञानी तो खा सकते हैं और आशीर्वाद दे सकते हैं; काम नहीं कर सकते ।

(घ) अगर हम बिना काम किये खाते हैं तो हमारा जीवन पापी बनता है ।

(ङ) प्रस्तुत निबंध से हमें कौन-सी शिक्षा मिलती है ?

5. रिक्त स्थानों को भरिए ।

(क) इसलिए भगवान् ने ________ को कर्मयोगी कहा है ।

(ख) ऐसा इसलिए होता है कि वे कर्म को ________ नहीं समझते ।

(ग) भगवान् ने कहा, आदरणीय हैं तो क्या ________ हैं ?

(घ) दिमागी काम करनेवालों को भी ________ दिये हैं ।

(ङ) ________ जो ज्ञानी होता था, पढ़ाता था ।

भाषा - ज्ञान

1. 'देहाती' शब्द देहात के साथ 'ई' प्रत्यय के योग से बना है । शब्द के अंत में आनेवाले शब्दांशों को प्रत्यय कहते हैं । यहाँ 'ई' एक तद्धित प्रत्यय है । हिन्दी में दो प्रत्यय होते हैं - कृदन्त और तद्धित ।

   उपर्युक्त उदाहरण की तरह 'ई' प्रत्यय के योग से बननेवाले शब्दों को प्रस्तुत निबंध से खोजकर लिखिए ।

2. 'यह पृथ्वी शेषनाग के मस्तक पर स्थित है' ।

   इस वाक्य में प्रयुक्त 'पर' अधिकरण कारक की सप्तमी विभक्ति का चिह्न है । इसे परसर्ग भी कहते हैं ।

   प्रस्तुत निबंध में जहाँ-जहाँ इसी परसर्ग 'पर' का प्रयोग हुआ है, उन्हें छाँटकर लिखिए ।

3. **निम्नलिखित वाक्यों पर ध्यान दीजिए ।**

   - जो शख्स पसीनेसे रोटी कमाता है, वह धर्म-पुरुष हो जाता है ।
   - अगर हम काम की इज्जत नहीं करते तो बड़ा भारी धर्म-कार्य खोते हैं ।
   - शरीर-श्रम करनेवाले को हम नीच मानते हैं ।

   इन वाक्यों में प्रयुक्त धर्म-पुरुष, धर्म-कार्य और शरीर-श्रम अधिक शब्दों के मेल से बने हैं ।

   जैसे - धर्म (का) पुरुष
   धर्म (का) कार्य
   शरीर (का) श्रम

जब एकाधिक शब्द एक-दूसरेसे मिल जाते हैं, तब उस मेल को समास कहा जाता है ।

समास सात प्रकार के होते हैं - अव्ययीभाव, तत्पुरुष समास, नञ् तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वन्द्व और बहुब्रीही समास । उपर्युक्त उदाहरण तत्पुरुष समास के हैं ।

4. 'आज देहाती लोग भी कहते हैं कि हमारे बच्चों को तालीम मिलनी चाहिए ।'

इस वाक्य में 'आज देहाती लोग भी कहते हैं' प्रधान वाक्य है और 'हमारे बच्चों को तालीम मिलनी चाहिए' आश्रित वाक्य है । इन दोनों वाक्यों को संयोजक अविकारी शब्द 'कि' मिलाता है ।

याद रखिए - जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य और एक आश्रित वाक्य हो, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं । रचना की दृष्टि से वाक्य के अनेक भेद पाये जाते हैं - सरल वाक्य, मिश्र वाक्य, संयुक्त वाक्य आदि ।

5. इस पाठ में जीवन, लोग, काम के आगे क्रमशः धार्मिक,देहाती और दिमागी शब्दों का प्रयोग हुआ है । इन शब्दों से उनकी विशेषता उभर कर आती है । पाठ से कुछ ऐसे ही शब्द छाँटिए जो किसी की विशेषता बता रहे हों ।

●

ममता

जयशंकर प्रसाद

कहानीकार का परिचय :

जयशंकर प्रसाद का जन्म सन् 1889 ईं में हुआ । उनके पिता सुंघनी साहू मशहूर तम्बाकू व्यापारी थे । वे व्यवसाय करते थे, लेकिन लिखते थे काव्य-कविता । क्योंकि उनके पिता देवीप्रसाद विद्वानों - गुणीजनों का आदर करते थे । प्रसादजी को उच्च शिक्षा नहीं मिली । उन्होंने घर पर हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी पढ़ी । माता-पिता का जल्दी देहान्त हो गया । इसलिए उन्हें किशोरावस्था से ही पारिवारिक भार उठाना पड़ा । सन् 1937 ई. को 48 वर्ष की उम्र में ही उनका निधन हो गया ।

प्रसाद जी मानव - मन के पारखी थे; प्रकृति के सुन्दर दृश्यों से मोहित थे । उन्होंने मानव के प्रेम, इच्छा, आकांक्षाओं का मार्मिक वर्णन किया । वे भारतीय इतिहास तथा संस्कृति के उद्गाता थे । उन्होंने अच्छे ऐतिहासिक नाटक लिखे, सुन्दर कहानियाँ लिखीं, तीन उपन्यास भी लिखे हैं ।

प्रसाद की रचनाएँ इस प्रकार हैं :-

काव्य - 'कानन कुसुम' प्रसाद की प्रारंभिक कविताओं का प्रथम संग्रह है । अन्य काव्य-कृतियों में चित्राधार, प्रेम-पथिक, महाराजा का महत्त्व, करुणामय, झरना, लहर, आँसू और कामायनी उल्लेखनीय हैं ।

नाटक - एक घूंट, कामना, विशाख, राजश्री, जनमेजय का नागयज्ञ, अजातशत्रु, ध्रुवस्वामिनी, स्कन्दगुप्त और चन्द्रगुप्त ।

कहानी-संग्रह - छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आंधी और इन्द्रजाल ।

उपन्यास - कंकाल, तितली और इरावती ।

आलोचनात्मक निबंध - 'काव्यकला' तथा अन्य निबंध ।

विचार-बिन्दु :

'ममता' जयशंकर प्रसाद की एक सुप्रसिद्ध कहानी है । रोहतास दुर्ग के ब्राह्मण-मन्त्री चूड़ामणि की विधवा बेटी ममता के माध्यम से कहानीकार ने भारतीय संस्कृति और पारंपरिक मूल्यबोध को दिखाया है ।

ममता मध्ययुग के रोहतास दुर्ग के ब्राह्मण-मन्त्री चूड़ामणि की विधवा पुत्री है । उसकी माता का पहले ही देहान्त हो चुका है । स्नेहपालिता पुत्री का दुःख कुछ कम करने के लिए पिता चूड़ामणि पठानों से प्राप्त स्वर्ण-मुद्रा भेंट करते हैं; पर ममता यह कहकर कि 'हम लोग ब्राह्मण हैं, इतना सोना लेकर क्या करेंगे' यह भेंट ठुकरा देती है । कुछ दिनों के पश्चात् पठानों से हुए संघर्ष में ममता के पिता मारे जाते हैं । दुर्ग पर शेरशाह का अधिकार हो जाता है । ममता भाग निकलती है और एक बौद्ध मठ के खण्डहरों में जा छिपती है ।

आगे चलकर मुगल बादशाह हुमायूँ चौसा-युद्ध में शेरशाह से हारकर एक रात को ममता की झोंपड़ी में पहुंचते हैं और आश्रय की भिक्षा मांगते हैं । 'अतिथि देवो भव'- इसी भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के नाम पर ममता हुमायूँ का परिचय मालूम न होते हुए भी उन्हें उस झोंपड़ी में आश्रय देती है एवं स्वयं पास की टूटी दीवारों में चली जाती है । दूसरे दिन सुबह हुमायूँ ममता की खोज करनेका आदेश सैनिकों को देते हैं, पर ममता कहीं नहीं मिलती । तब उस झोंपड़ी के स्थान पर एक घर बनानेका आदेश मिरजा को देते हुए हुमायूँ लौट जाते हैं ।

फिर 47 सालों के बाद अकबर जब मुगल बादशाह बनते हैं, तब उनकी आज्ञा से मिरजा ममता का घर बनवाने के लिए आते हैं । उस समय ममता 70 साल की वृद्धा है । मुगलों को अपनी झोंपड़ी सौंपकर ममता स्वर्ग सिधार जाती है । उस स्थान पर हुमायूँ की स्मृति में एक अष्टकोण मन्दिर बनवाया तो जाता है, पर कहीं भी उस मन्दिर पर ममता का नाम लिखा नहीं जाता ।

रोहतास-दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता, शोण के तीक्ष्ण गम्भीर प्रवाह को देख रही थी । ममता विधवा थी । उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था । मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिए वह सुख के कंटक-शयन में विकल थी । वह रोहतास दुर्गपति के मंत्री चूडामणि की अकेली दुहिता थी । फिर उसके लिए कुछ अभाव का होना असंभव था, परन्तु वह विधवा थी । हिन्दू विधवा संसार में सबसे तुच्छ, निराश्रय प्राणी है-तब विड़म्बना का कहाँ अन्त था ?

चूड़ामणि ने चुपचाप उस प्रकोष्ठ में प्रवेश किया । शोण के प्रवाह में वह अपना जीवन मिलाने में बेसुध थी । पिता का आना न जान सकी । चूड़ामणि व्यथित हो उठे । स्नेहपालिता पुत्री के लिए क्या करें; यह स्थिर न कर सकते थे । लौटकर बाहर चले गये । ऐसा प्राय: होता, पर आज मंत्री के मन में बड़ी दुश्चिन्ता थी । पैर सीधे न पड़ते थे ।

एक पहर रात बीत जाने पर फिर वे ममता के पास आये । उस समय उनके पीछे दस सेवक चाँदी के बड़े थालों में कुछ लिए खड़े थे, कितने ही मनुष्यों के पद-शब्द सुन ममता ने घूम कर देखा । मंत्री ने सब थालों के रखने का संकेत किया । अनुचर थाल रखकर चले गए ।

ममता ने पूछा - ''यह क्या है पिताजी ?''

''तेरे लिए बेटी, उपहार है ।'' यह कहकर चूड़ामणि ने आवरण उलट दिया । सुवर्ण का पीलापन उस सुनहली संध्या में विकीर्ण होने लगा । ममता चौंक उठी...

''इतना स्वर्ण ! यह कहाँ से आया ?''

''चुप रहो ममता ! यह तुम्हारे लिए हैं ।''

''तो क्या आपने म्लेच्छ का उत्कोच स्वीकार कर लिया ? पिताजी ! यह अर्थ नहीं, अनर्थ है । लौटा दीजिए । पिताजी ! हम लोग ब्राह्मण हैं, इतना सोना लेकर क्या करेंगे ?''

''इस पतनोन्मुख प्राचीन सामन्त-वंश का अन्त समीप है, बेटी; किसी भी दिन शेरशाह रोहतास पर अधिकार कर सकता है । उस दिन मंत्रित्व न रहेगा, तब के लिए बेटी !''

''हे भगवान् ! तब के लिए ! विपद् के लिए इतना आयोजन ! परमपिता की इच्छा के विरुद्ध इतना साहस ? पिताजी, क्या भीख न मिलेगी ? क्या कोई हिन्दू भू-पृष्ठ पर न बचा रह जाएगा, जो ब्राह्मण को दो मुट्ठी अन्न दे सके ? असम्भव है । फेर दीजिए पिताजी ! मैं काँप रही हूँ- इसकी चमक आँखों को अन्धा बना रही है ।''

''मूर्ख है'' - कहकर चूड़ामणि चले गये ।

x x x x

दूसरे दिन जब डोलियों का तांता भीतर आ रहा था, ब्राह्मण मंत्री चूड़ामणि का हृदय धक्-धक् करने लगा । वह अपने को न रोक सका । उसने जाकर रोहतास-दुर्ग के तोरण पर डोलियों का आवरण खुलवाना चाहा । पठानों ने कहा- ''यह महिलाओं का अपमान करना है ।''

बात बढ़ गयी । तलवारें खिंचीं, ब्राह्मण मंत्री वहीं मारा गया और राजा, रानी तथा कोष सब छली शेरशाह के हाथ पड़े; निकल गयी ममता । डोली में भरे हुए पठान सैनिक दुर्ग भर में फैल गये, पर ममता न मिली ।

x x x x

काशी के उत्तर धर्मचक्र बिहार मौर्य और गुप्त सम्राटों की कीर्त्ति का खंडहर था - भग्नचूड़ा, तृणा-गुल्मों से ढके हुए प्राचीर ईंटों के ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्प की विभूति, ग्रीष्म रजनी की चन्द्रिका में अपने को शीतल कर रही थी ।

जहाँ पंचवर्गीय भिक्षु गौतम का उपदेश ग्रहण करने के लिए पहले मिले थे, उसी स्तूप के भग्नावशेष की मलिन छाया में एक झोंपड़ी के दीपालोक में एक स्त्री पाठ कर रही थी-

‘अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।’’...

पाठ रुक गया । एक भीषण और हताश आकृति दीप के मंद प्रकाश में सामने खड़ी थी । स्त्री उठी, उसने कपाट बन्द करना चाहा; परन्तु व्यक्ति ने कहा-

‘‘माता ! मुझे आश्रय चाहिए ।’’

‘‘तुम कौन हो ?’’ स्त्री ने पूछा ।

‘‘मैं मुगल हूँ । चौसा - युद्ध में शेरशाह से विपन्न होकर रक्षा चाहता हूँ । इस रात अब आगे चलने में असमर्थ हूँ ।’’

‘‘क्या शेरशाह से ?’’ स्त्री ने अपने होंठ काट लिये ।

‘‘हाँ, माता !’’

‘‘परन्तु तुम भी वैसे ही क्रूर हो । वही भीषण रक्त की प्यास, वही निष्ठुर प्रतिबिम्ब तुम्हारे मुख पर भी है । सैनिक ! मेरी कुटी में स्थान नहीं । जाओ, कहीं दूसरा आश्रय खोज लो ।’’

‘‘गला सूख रहा है, साथी छूट गए हैं, अश्व गिर पड़ा है - इतना थका हुआ हूँ, इतना !’’ कहते वह व्यक्ति धम से बैठ गया और उसके सामने ब्रह्माण्ड घूमने लगा । स्त्री ने सोचा, यह विपत्ति कहाँ से आयी; उसने जल दिया । मुगल के प्राणों की रक्षा हुई । वह सोचने लगी-

‘‘सब विधर्मी दया के पात्र नहीं - मेरे पिता का वध करने वाले आततायी !’’ घृणा से उसका मन विरक्त हो गया ।

स्वस्थ होकर मुगल ने कहा - ‘माता ! तो फिर मैं चला जाऊँ ?’

स्त्री विचार कर रही थी - ‘‘मैं ब्राह्मण हूँ, मुझे तो अपने धर्म - अतिथि देव की उपासना का पालन करना चाहिए; परन्तु यहाँ .... नहीं नहीं, यह सब विधर्मी दया के पात्र नहीं; परन्तु यह दया तो नहीं कर्त्तव्य करना है । तब ?’’

मुगल अपनी तलवार टेक कर उठ खड़ा हुआ । ममता ने कहा - ''क्या आश्चर्य है कि तुम भी छल करो ।''

''छल ! नहीं, तब नहीं स्त्री ! जाता हूँ, तैमूर का वंशधर स्त्री से छल करेगा ! जाता हूँ, भाग्य का खेल है ।''

ममता ने मन में कहा - ''यहाँ कौन दुर्ग है ! यही झोंपड़ी है, जो चाहे ले ले । मुझे तो अपना कर्त्तव्य करना पड़ेगा ।'' वह बाहर चली आयी और मुगल से बोली, ''जाओ भीतर, थके हुए भयभीत पथिक ! तुम चाहे कोई हो, मैं तुम्हें आश्रय देती हूँ । मैं ब्राह्मण-कुमारी हूँ, सब अपना धर्म छोड़ दें तो मैं भी क्यों छोड़ दूँ ?''

मुगल ने चन्द्रमा के मंद प्रकाश में वह महिमामय मुखमंडल देखा । उसने मन ही मन नमस्कार किया । ममता पास की टूटी हुई दीवारों में चली गयी । भीतर थके पथिक ने झोंपड़ी में विश्राम किया ।

प्रभात में खंडहर की संधि से ममता ने देखा, सैकड़ों अश्वारोही उस प्रान्त में घूम रहे हैं । वह अपनी मूर्खता पर अपने को कोसने लगी ।

अब उस झोंपड़ी से निकल कर उस पथिक ने कहा - ''मिरजा ! मैं यहाँ हूँ ।''

शब्द सुनते ही प्रसन्नता की चीत्कार- ध्वनि से वह प्रान्त गूँज उठा । ममता अधिक भयभीत हुई । पथिक ने कहा- ''वह स्त्री कहाँ है ? उसे खोज निकालो ।'' ममता छिपने के लिए अधिक सचेष्ट हुई । वह मृगदाव में चली गयी । दिन भर उसमें से न निकली । संध्या को जब उनके जाने का उपक्रम हुआ, तो ममता ने सुना, पथिक घोड़े पर सवार होते हुए कह रहा था- ''मिरजा ! उस स्त्री को मैं कुछ भी न दे सका । उसका घर बनवा देना, क्योकि विपत्ति में मैंने यहाँ आश्रय पाया था । यह स्थान भूलना मत ।'' - इसके बाद वे चले गये ।

x x x x

चौसा के मुगल-पठान युद्ध को बहुत दिन बीत गये । ममता अब सत्तर वर्ष की वृद्धा है । वह अपनी झोंपड़ी में एक दिन पड़ी थी । शीतकाल का प्रभाव था । उसका जीर्ण कंकाल खाँसी से गूँज रहा था । ममता की सेवा के लिए गाँव की दो-तीन स्त्रियाँ उसे घेर कर बैठी थीं, क्योंकि वह आजीवन सब के सुख-दुःख की सहभागिनी रही ।

ममता ने जल पीना चाहा । एक स्त्री ने सीपी से जल पिलाया । सहसा एक अश्वारोही उसी झोंपड़ी के द्वार पर दिखायी पड़ा । वह अपनी धुन में कहने लगा ''मिरजा ने जो चित्र बनाकर दिया है, वह तो इसी जगह का होना चाहिए । वह बुढ़िया मर गई होगी । अब किससे पूछें कि एक दिन शाहंशाह हुमायूँ किस छप्पर के नीचे बैठे थे ? यह घटना भी तो सैंतालीस वर्ष से ऊपर की हुई ।''

ममता ने अपने विकल कानों से सुना । उसने पास की स्त्री से कहा - ''बुलाओ ।''

अश्वारोही पास आया । ममता ने रुक-रुक कर कहा- ''मैं नहीं जानती वह शाहंशाह था या साधारण मुगल; पर एक दिन इसी झोंपड़ी के नीचे वह रहा था । मैंने सुना था, वह मेरा घर बनाने की आज्ञा दे गया था । मैं आजीवन अपनी झोंपड़ी खुदवाने के डर से भयभीत रही थी ।''

''भगवान ने सुन लिया, मैं आज इसे छोड़े जाती हूँ । अब तुम इसका मकान बनाओ या महल; मैं अपने चिर विश्राम-गृह में जाती हूँ ।''

वह अश्वारोही अवाक् खड़ा था । बुढ़िया के प्राण-पक्षी अनन्त में उड़ गये ।

x x x x

वहाँ एक अष्टकोण मन्दिर बना और उस पर शिलालेख लगाया गया-

''सातों देशों के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था । उनके पुत्र अकबर ने उसकी स्मृति में यह गगनचुम्बी मन्दिर बनवाया ।''

पर उसमें ममता का कहीं नाम न था ।

शब्दार्थ

शोण - एक नदी का नाम । विकल - व्याकुल । बेसुध - बेहोश, मग्न । विकीर्ण - फैला या छितराया हुआ । म्लेच्छ - मनुष्यों की वे जातियाँ जिनमें धर्म न हो । उत्कोच - घूस या रिश्वत । डोली - एक प्रकार की सवारी जिसे कहार कन्धों पर लेकर चलते हैं । ताँता - कतार । कोष - संचित धन । पठान - अफगानिस्थान और पश्चिम पाकिस्तान के बीच बसी हुई एक मुसलमान जाति जो वीरता, कठोरता आदि के लिए प्रसिद्ध है । मुगल - मंगोल देश का निवासी, मुसलमानों का एक वर्ग । धर्मचक्र - धर्म का समूह । तृणगुल्म - कई शाखाओं में होकर निकलनेवाली घास । चन्द्रिका - चाँदनी । स्तूप - एक ढूह या टीला जिसके नीचे भगवान् बुद्ध की अस्थि, दाँत, केश आदि स्मृति-चिह्न सुरक्षित हों । कपाट - किवाड़, पट, दरवाजा । खण्डहर - किसी टूटे हुए या गिरे हुए मकान का बना हुआ भाग । मृगदाव - काशी के पास 'सारनाथ' नामक स्थान का प्राचीन नाम । सीपी - कड़े आवरण के भीतर रहनेवाला शंख, घोंघा आदि की जाति का एक जल-जन्तु ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए ।

(क) 'ममता' कहानी का सारमर्म अपने शब्दों में लिखिए ।

(ख) 'ममता' कहानी का मुख्य चरित्र कौन है ? उसकी चारित्रिक विशेषताओं को बताइए ।

(ग) इस कहानी से आपको क्या प्रेरणा मिलती है ?

(घ) इस कहानी में लेखक का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए ।

(क) रोहतास दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता किसे देख रही थी ?

(ख) ममता का यौवन किसके समान उमड़ रहा था ?

(ग) संसार में सबसे तुच्छ निराश्रय प्राणी कौन है ?

(घ) चूड़ामणि क्यों व्यथित हो गये ?

(ङ) ममता ने पिता का उपहार क्यों स्वीकार नहीं किया ?

(च) चूड़ामणि का हृदय क्यों धक्-धक् करने लगा ?

(छ) ब्राह्मण-मन्त्री कैसे मारा गया ?

(ज) मौर्य और गुप्त सम्राटों की कीर्त्ति का खण्डहर कहां था ?

(झ) भारतीय शिल्प की विभूति कहां बिखरी हुई थी ?

(ञ) 'सब विधर्मी दया के पात्र नहीं' - ऐसा ममता ने क्यों कहा ?

(ट) स्त्री क्या विचार कर रही थी ?

(ठ) ममता ने मन में क्या कहा ?

(ड) किसके प्रकाश में मुगल ने ममता का मुखमण्डल देखा ?

(ढ) ममता ने मुगल से क्या कहा ?

(ण) प्रभात में खण्डहर की सन्धि से ममता ने क्या देखा ?

(त) किस युद्ध को बहुत दिन बीत गये ?

(थ) हुमायूँ ने एक दिन कहाँ विश्राम किया था ?

(द) हुमायूँ कौन था ? उसका युद्ध किससे और कहाँ हुआ ?

(ध) हुमायूँ ने मिरजा से क्या करने के लिए कहा ?

(न) ममता ने अश्वारोही से क्या कहा ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक शब्द में दीजिए ।

(क) रोहतास दुर्गपति के मन्त्री कौन थे ?

(ख) ममता किसकी पुत्री थी ?

(ग) शोण के प्रवाह में अपना जीवन मिलाने में कौन बेसुध थी ?

(घ) सुनहली सन्ध्या में किसका पीलापन विकीर्ण होने लगा ?

(ङ) म्लेच्छ का उत्कोच किसने स्वीकार किया था ?

(च) किसने कहा कि 'माता', मुझे आश्रम चाहिए ?

(छ) कौन-से युद्ध में शेरशाह से विपन्न होकर मुगल रक्षा चाहता था ?

(ज) किसने सोचा कि उसे अतिथि-देव की उपासना का पालन करना चाहिए ?

(झ) 'भाग्य का खेल है' - यह वाक्य किसने कहा ?

(ञ) सैनिकों के खोजने पर ममता कहाँ चली गयी ?

(ट) किसका जीर्ण-कंकाल खांसी से गूंज रहा था ?

(ठ) ममता की सेवा के लिए गांव की कितनी स्त्रियां उसे घेर कर बैठी थीं ?

(ड) कौन अवाक् खड़ा था ?

(ढ) ममता की झोंपड़ी पर कौन-सा मन्दिर बना ?

(ण) सातों देशों का नरेश कौन था ?

(त) गगनचुम्बी मन्दिर किसने बनवाया ?

(थ) किसमें ममता का नाम नहीं था ?

(द) किसने कहा कि 'यह महिलाओं का अपमान करना है' ?

(ध) ममता को एक स्त्री ने किससे जल पिलाया ?

4. निम्नलिखित अवतरणों को पढ़कर उनका आशय स्पष्ट कीजिए ।

(क) उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था ।

(ख) शोण के प्रवाह में वह अपना जीवन मिलाने में बेसुध थी ।

(ग) इस पतनोन्मुख प्राचीन सामन्त वंश का अंत समीप है ।

(घ) परन्तु तुम भी वैसे ही क्रूर हो । वही भीषण रक्त की प्यास, वही निष्ठुर प्रतिबिम्ब तुम्हारे मुख पर भी है ।

(ङ) मैं ब्राह्मण-कुमारी हूँ, सब अपना धर्म छोड़ दें तो मैं भी क्यों छोड़ दूँ ?

(च) उस स्त्री को मैं कुछ भी न दे सका ।

(छ) अब तुम इसका मकान बनाओ या महल, मैं अपने चिर विश्राम-गृह में जाती हूँ ।

5. निम्नलिखित वाक्यों को 'किसने' और 'किससे' कहा ?

(क) क्या आपने म्लेच्छ का उत्कोच स्वीकार कर लिया ?

(ख) यह महिलाओं का अपमान करना है ।

(ग) माता, मुझे आश्रय चाहिए ।

(घ) गला सूख रहा है, साथी छूट गये हैं, अश्व गिर पड़ा है ।

(ङ) उस स्त्री को मैं कुछ भी न दे सका ।

भाषा - ज्ञान

1. प्रस्तुत कहानी में अनेक तत्सम शब्द आये हैं । जैसे - कंटक, दुर्गपति, निराश्रय आदि ।

इसी तरह इस पाठ में आए तत्सम शब्दों को छाँटिए और उनका अर्थ लिखिए ।

2. **निम्नलिखित वाक्यों पर ध्यान दीजिए ।**

- 'आँखों में पानी की बरसात लिए वह सुख के कंटक शयन में विकल थी ।'
- 'तो क्या आपने म्लेच्छ का उत्कोच स्वीकार कर लिया ?

उपर्युक्त वाक्यों में 'बरसात' स्त्रीलिंग है और 'उत्कोच' पुंलिंग है । इसी कारण इन शब्दों के पहले प्रयुक्त विभक्ति का प्रयोग क्रमश: 'की' और 'का' के रूप में हुआ है ।

इसी तरह के वाक्य चुनकर रेखांकित करने के साथ-साथ लिंग बताइए ।

3. **नीचे लिखे वाक्यों में विराम चिह्न लगाइए ।**

मैं नहीं जानती कि वह शाहंशाह था या साधारण मुगल पर एक दिन इसी झोंपड़ी के नीचे वह रहा था मैंने सुना था वह मेरा घर बनानेकी आज्ञा दे गया था मैं आजीवन अपनी झोंपड़ी खुदवाने के डर से भयभीत रही थी ।

4. **नीचे दिये गये उपसर्ग एवं प्रत्यय-युक्त शब्दों के मूल शब्द बताइए ।**

प्रकोष्ठ, निराश्रय

इस तरह के कुछ शब्दों की सूची तैयार कीजिए ।

गृहकार्य :

1. मुगल बादशाह हुमायूँ और शेरशाह के बीच हुए चौसा-युद्ध का विवरण इतिहास-पुस्तक से प्राप्त कीजिए ।
2. इतिहास में मौर्य और गुप्त सम्राटों की कीर्त्ति की कहानी पढ़िए ।
3. 'ममता' कहानी का नाट्य रूप प्रस्तुत करके अपने विद्यालय के वार्षिक उत्सव पर इसका अभिनय कीजिए ।

●

जेल में मेरे मित्र

पं. जवाहरलाल नेहरू

लेखक परिचय :

स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्म 14 नवम्बर सन् 1889 ई. को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद के 'आनन्द भवन' में हुआ था । उनके पिता पंडित मोतीलाल नेहरू अपने समय के प्रतिष्ठित वकील थे, जिन्होंने अपने ज्ञान और तर्क-शक्ति से बहुत नाम कमाया था । जवाहरलाल पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव होते हुए भी उनका भारतीय सभ्यता और संस्कृति से बेहद प्यार था ।

नेहरूजी ने इंग्लैंड़ के प्रसिद्ध 'हैरो' स्कूल में और उसके बाद 'ट्रिनिटी कॉलेज' में अध्ययन किया । वे विज्ञान के छात्र थे । वे वैरिष्टर बनकर भारत लौटे । सत्याग्रह आन्दोलन में हिस्सा लेने के कारण उन्हें अनेक बार जेल जाना पड़ा । वे कांग्रेस के सभापति भी रहे ।

स्वतंत्रता के बाद वे देश के प्रथम प्रधानमंत्री बने । वे केवल कुशल राजनीतिज्ञ और अधिक परिश्रमी नहीं थे, बल्कि प्रभावशाली लेखक भी थे । उनकी आत्मकथा 'मेरी कहानी', 'विश्व इतिहास की झलक', 'भारत की खोज', 'पिता का पत्र पुत्री के नाम' उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं ।

पंडित जवाहरलाल नेहरू प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी और मानवता के पुजारी थे । अपने अनमोल व्यक्तित्व और अप्रतिम देश-सेवा के कारण भारत सरकार ने उन्हें 'भारतरत्न' सम्मान से सम्मानित किया है ।

27 मई सन् 1964 ई. को उनका देहांत हुआ था ।

विचार-विन्दु :

स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू महान स्वतंत्रता सेनानी थे । स्वतंत्रता-आन्दोलन के दिनों में उन्हें अनेक बार जेल जाना पड़ा था । अपने जेल-जीवन के दौरान नेहरूजी ने आस-पास पाये जानेवाले जीव-जन्तुओं का अच्छा अध्ययन किया । इन्हीं अनुभवों को उन्होंने बड़े सरल, सरस और सजीव रूप में यहाँ प्रस्तुत किया है ।

मैं देहरादून जेल की उस कोठरी में लगभग साढ़े चौदह महीने रहा । मुझे लगने लगा कि जैसे यह मेरा ही घर हो । मैं उसके कोने-कोने से परिचित हो गया । सफ़ेद दीवारों, छत और कीड़ों द्वारा खाई हुई कड़ियों पर पड़ी हुई प्रत्येक रेखा और विंदु को मैं पहचानने लगा था । जेल में दूसरे कार्यों से फ़ुरसत होने के कारण हम प्रकृति के अधिक निकट होते चले गए । अपने सामने आने-जानेवाले जानवरों और कीड़ों को हम बड़े ध्यान से देखते थे । मैंने अनुभव किया कि मेरी यह शिकायत उचित न थी कि मेरा आँगन सूना और उजड़ा हुआ है । मैंने पाया कि वह तो जीवों से भरा हुआ था । ये सब रेंगने, फिसलकर चलने और उड़नेवाले कीड़े-मकोड़े मेरे दैनिक जीवन में बिना किसी प्रकार की छेड़छाड़ किए हुए रह रहे थे । ऐसा कोई कारण न था कि मैं उनसे किसी प्रकार की छेड़छाड़ करता । हाँ, खटमलों, मच्छरों और मक्खियों से मुझे निरंतर युद्ध करना पड़ता था ।

जहाँ पर वृक्ष थे, वहाँ गिलहरियों के झुंड के झुंड मज़े से घूमते रहते । गिलहरियाँ बिलकुल न डरतीं और साहसपूर्वक हमारे पास आ जाती थीं । वे इधर से उधर भागतीं मानो एक-दूसरी से आगे बढ़ने का खेल खेल रही हों । मुझे उनकी अठखेलियाँ देखने में बड़ा आनंद आता ।

लखनऊ जेल की बात है । मैं घंटों बिना हिले-डुले बैठा पढ़ता-लिखता रहता । एक गिलहरी मेरे पैरों पर चढ़कर गोद में आ बैठती थी और मेरे मुँह की ओर देखने लगती थी । वह मेरी आँखों की ओर गौर से देखती थी और अनुभव करती थी कि मैं वृक्ष नहीं हूँ ।

वह मुझे क्या समझती रही, मैं नहीं बता सकता । मैं ज़रा-सा हिलता कि वह भयभीत होकर भाग खड़ी होती । कभी-कभी गिलहरियों के छोटे बच्चे पेड़ों से नीचे गिर जाते थे । उनकी माताएँ उनके पीछे दौड़ी हुई आतीं और उन्हें गेंद की तरह अपने मुँह में दबाकर सुरक्षित स्थान पर ले जाती थीं । कभी-कभी बच्चे खो भी जाया करते थे । हमारे एक साथी ने इस प्रकार गिलहारियों के खोए हुए तीन बच्चों को पाल रखा था ।

एक दिन मैंने कुछ शोर सुना । ''हाय ! ये गिलहरी के नन्हे-नन्हे बच्चे कहीं मर ही न जाएँ ।'' मैं उधर गया तो देखा कुछ कैदी खड़े ''अरे !'' ''अरे !'' ''हाय, हाय !'' कर रहे थे ! मैंने उन बच्चों को देखा तो निश्चित हो गया । वे जीवित थे । मैंने कहा, ''तुम सब इन बच्चों को घेरे खड़े हो, इनकी माँ इन्हें लेने कैसे आ सकती है ? चलो, हम बरामदे में बैठकर देखते हैं ।'' मैंने कैदियों को बताया कि मैं रोज़ इन गिलहरियों को देखता हूँ । कई बार इनके बच्चे वृक्ष की टहनी से नीचे गिर जाते हैं । इनकी माताएँ फुर्ती से नीचे आती हैं । बड़े ध्यान से इन्हें गेंद की तरह गोल-गोलकर मुँह में दबा लेती हैं और फिर पेड़ पर ले जाती हैं ।

संध्या का समय था । धीरे-धीरे रात होने लगी, परंतु माँ गिलहरी न आई । मैं चिंतित हो उठा, कुछ तो करना होगा । कैदी उन बच्चों को उठाकर मेरी कोठरी में ले आए । पांडे जी आते ही बोले, ''ये बच्चे तो बहुत ही छोटे हैं, न तो ये पत्ते चबा सकते हैं और न ही इन्हें रोटी का चूरा कर खिलाया जा सकता है, कैसे जीवित रखा जाएगा इन्हें ?''

दूसरे ने सुझाव दिया कि इन्हें बोतल से दूध पिलाया जाए, पर कैसे ! जेल में बोतल कहाँ ? फिर वे इतने छोटे थे कि बोतल से तो दूध पी न सकते थे । उनका पालन-पोषण करना कठिन समस्या बन गई थी ।

सब सोच में पड़े थे कि मेरी दृष्टि पेन में स्याही भरनेवाली नली पर पड़ी । मैंने नली को उठाया और सबको दिखाते हुए कहा, ''इसे बनाते हैं बोतल ।'' फिर शुरू हुआ नली से दूध पिलाने का प्रयास । पर नली से दूध की बूँद कभी बच्चों की नाक पर गिरती और कभी ज़मीन पर । कभी बच्चे मुँह ही न खोल पाते और कभी हम नली को स्थिर न रख पाते । सब परेशान थे कि जल्दी ही दूध न पिलाया गया तो ये बेचारी मर जाएँगे ।

जेलर रामप्रसादजी भी यह सब देख रहे थे । उनके मन में कोई विचार कौंधा और वे भागते हुए वहाँ से चले गए । क्षणभर में हाथ में रुई लिए आए । नली में दूध डाला, उस पर रुई लपेटी । रुई दूध से गीली हो गई और गिलहरी का नन्हा बच्चा रुई चूसने लगा । चूस-चूसकर बच्चे ने नली का पूरा दूध पी लिया । इसी तरह बाकी दोनों बच्चों को भी दूध पिलाया गया ।

हम सब इतने प्रसन्न थे मानो विश्व जीत लिया हो । अब ये तीनों बच्चे हमारे जेल-परिवार के चहेते सदस्य थे ।

अल्मोड़ा की जेल को छोड़कर जितनी जेलों में मैं गया, वे सब कबूतरों से भरी रहती थीं । जेलों में हज़ारों कबूतर रहते थे और शाम को आकाश उनसे ढक-सा जाता था । कहीं-कहीं मैना भी रहती थीं । देहरादून जेल की मेरी कोठरी में मैना के एक जोड़े ने अपना घोंसला बना रखा था । मैं उन दोनों को खिलाया-पिलाया करता था । वे इतने पालतू हो गए थे कि यदि सुबह या शाम उन्हें खाना मिलने में ज़रा-सी देर हो जाती तो वे चुपचाप मेरे पास बैठ जाते और ज़ोर से चिल्लाकर अपना भोजन माँगने लगते थे । उनकी क्रियाएँ और चिल्लाहट सुनकर बड़ा आनंद आता ।

नैनी जेल में हज़ारों तोते थे । एक बहुत बड़ी संख्या मेरी बैरक की दीवारों पर रहा करती थी । उनकी प्रेममय बातचीत देखनेवाली होती थी । उनकी नोक-झोंक सुनने का आनंद तो अनोखा ही था ।

देहरादून में सैकड़ों प्रकार की चिड़ियाँ थीं । वे गाती, चहचहाती, मधुर ध्वनि करती थीं । इनमें सर्वश्रेष्ठ कोयल की पुकार रहती थी । उसकी कुहू-कुहू सुन हम इतने आनंदित हो उठते और भूल जाते कि जेल में हैं ।

बरेली जेल में बंदरों का एक दल बसा हुआ था और उनकी किस्में देखने योग्य थीं । एक घटना ने मुझ पर बड़ा प्रभाव डाला । एक बंदर का बच्चा हमारी बैरक में आ गया और लौटकर फिर दीवार पर न चढ़ सका । वार्डनों और कैदियों ने उसे पकड़ लिया और एक रस्सी से बाँध दिया । ऊँची दीवार के ऊपर से उस बच्चे के माँ-बाप ने यह देखा । उनका क्रोध बढ़ने लगा । एकाएक उनमेंसे एक बहुत बड़ा और मोटा बंदर खीं-खीं करता नीचे कूदा । उसने भीड़ पर सीधा आक्रमण किया । यह बहुत ही बहादुरी का काम था, क्योंकि वार्डन और कैदी हाथों में बड़े-बड़े डंडे घुमा रहे थे । साहस की विजय हुई । मनुष्यों की भीड़ डरी और अपने डंडे छोड़ भाग खड़ी हुई । बड़ा बंदर बच्चे को छुड़ाकर शान के साथ ले गया ।

प्राय: हमारी भेंट ऐसे जानवरों से भी हो जाया करती थी जिनका हम स्वागत न कर सकते थे । कोठरियों में अक्सर बिच्छू घूमा करते थे । कभी वे मेरे बिस्तर पर मिलते या उस किताब में मिलते थे जिसे मैं अचानक उठा लिया करता था । पर आश्चर्य की बात है कि उन्होंने कभी मुझे डंक नहीं मारा । एक बार मैंने एक ज़हरीले बिच्छू को एक डोरे में बाँधकर दीवार पर लटका दिया । थोड़ी ही देर बाद वह वहाँ से भाग खड़ा हुआ । इस स्वतंत्र बिच्छू से दोबारा मिलने की मेरी इच्छा न थी । अतएव मैंने अपनी कोठरी के कोने-कोने में उसकी तलाश की, किंतु वह तो गायब हो चुका था ।

मेरी कोठरी में और उसके आस-पास तीन-चार साँप भी पाए गए । एक साँप के मिलने की खबर तो समाचार-पत्रों में भी छप गई थी । इस प्रकार की घटनाओं का मैं स्वागत किया करता था, क्योंकि जेल का जीवन प्रतिदिन एक-सा रहता है और जो घटना

इस एक-से जीवन की समरसता को भंग करती है, उसका स्वागत किया जाता है । मैं साँपों का स्वागत नहीं करता । किंतु उनसे डरता भी नहीं हूँ, जैसे अन्य लोग डरते हैं । यद्यपि मैं उनके काटे जाने से डरता हूँ और साँप को देखता हूँ तो उससे अपनी रक्षा भी करता हूँ लेकिन मेरे हृदय में किसी प्रकार की घबराहट या भय पैदा नहीं होता ।

जीवों और कीड़े-मकोड़ों से मेरी भेंट जितनी जेल के अंदर हुई उतनी जेल के बाहर नहीं हुई । वे मुझे अपने मित्रों जैसे ही लगे और थे भी । क्योंकि वे मेरे अकेलेपन के संगी-साथी थे ।

(पं. जवाहरलाल नेहरू की आत्मकथा से)

शब्दार्थ

कोठरी - छोटा कमरा । परिचित - जान पहचान का । कड़ियों - लगाम, छोटी धरन । फुरसत - खाली समय । कीड़ा - कीट, रेंगनेवाला या उड़नेवाला जन्तु । शिकायत - अभियोग । उजड़ा - बरबाद । रेंगना- धीरे धीरे चलना, चींटी आदि कीड़ों का चलना । कीड़े-मकोड़े - कीट पतंग । दैनिक - प्रतिदिन का । छेड़छाड़- हँसी दिल्लगी । खटमल - खाट या कुर्सियों में होनेवाला कीड़ा । मच्छर - मशक । मक्खि - मक्षिका । निरंतर - लगातार । गिलहरी - एक प्रकार की चुहिया । झुंड - दल, समूह । अठखेलियाँ - खेलकूद । साहसपूर्वक - हिम्मत से । गोद - क्रोड़ । गौर - ध्यान, ख्याल । जरा - थोड़ा, कम । गेंद - कंदुक, बॉल । खोना- गँवाना, नष्ट करना । भयभीत - डरा हुआ । सुरक्षित - अच्छी तरह रक्षित । शोर - कोलाहल । कैदी - बन्दी । निश्चित - चिंता रहित । बरामदा - दालान । टहनी - पेड़ की डाली/शाखा । फुर्ती - तेजी, जल्दी । गोल - वृत्ताकार घेरे या

परिधि वाला । सुझाव - सलाह, परामर्श । स्याही - कालिमा, मसि । प्रयास- प्रयत्न, कोशिश । परेशान - व्याकुल, व्यग्र । कौंधा - बिजली की चमक । रुई - कपास का रेशा । नन्हा- छोटा । प्रसन्न - खुश । चहेते - बहुत प्यारा । घोंसला - नीड़, बसेरा । देर - विलंब । बैरक - जेलखाने का लंबा कमरा । नोक-झोंक - परस्पर होनेवाली झड़प, आक्षेप । सैकड़ों - अगणित, कई सौ । सर्वश्रेष्ठ - सबसे अच्छा/अच्छी । बन्दर - कपि, वानर । किस्में - प्रकार । वार्डन - जेल के वार्ड का रक्षक । एकाएक - अकस्मात, सहसा, अचानक । डंडा - मोटी छड़ी । भेंट - मेलाप, मेल, मिलन । बिस्तर - बिछौना । जहरीला- विषैला । तलाश - खोज, चाह । गायब - लुप्त, छिपा हुआ । अतएव - इसलिए । समरसता - एक जैसा होने का भाव । यद्‌यपि - हालाँकि । घबराहट - व्याकुलता, अधीरता । अकेलेपन - एकाकी, निर्जनता । अक्सर- प्रायः । बहुधा - अधिकतर ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) देहरादून जेल नेहरूजी को किस तरह अपना घर मालूम होने लगा ?

(ख) जेल में दूसरे कार्यों से फुरसत होने के कारण नेहरूजी का क्या अनुभव हुआ है ?

(ग) खटमलों, मच्छरों और मक्खियों से नेहरूजी को क्यों निरंतर युद्ध करना पड़ता था ?

(घ) गिलहरियों के बारे में नेहरूजी ने क्या लिखा है ?

(ङ) विभिन्न जेलों में नेहरूजी का किन-किन जीवों से सामना हुआ ?

(च) तरह-तरह के जीवों के बारे में लेखक ने क्या विचार व्यक्त किए ?

(छ) लेखक इन जीव-जन्तुओं से भयभीत क्यों नहीं था ?

(ज) गिलहरी के बच्चे को बचाने का क्या उपाय किया गया ?

(झ) गिलहरी के नन्हें बच्चों को किस तरह दूध पिलाया गया ?

(ञ) नेहरूजी ने अल्मोड़ा जेल में रहनेवाले मैना के एक जोड़े के बारे में क्या लिखा है ?

(ट) देहरादून जेल में नेहरूजी कैसे भूल जाते थे कि वे जेल में हैं ?

(ठ) बरेली जेल में बन्दरों के साहस की कैसे विजय हुई ?

(ड) बरेली जेल के बिच्छू के बारे में नेहरूजी के क्या विचार थे ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

(क) देहरादून जेल की उस कोठरी में नेहरूजी लगभग कितने महीने रहे ?

(ख) नेहरूजी जेल में क्या-क्या चीजें पहचानने लगे थे ?

(ग) जेल में दूसरे कार्यों से फुरसत होने के कारण नेहरूजी किसके अधिक निकट होते चले गए ?

(घ) किससे नेहरूजी को निरंतर युद्ध करना पड़ता था ?

(ङ) नेहरूजी को किसकी अठखेलियाँ देखने में बड़ा आनन्द आता था ?

(च) नेहरूजी लखनऊ जेल में घंटों बैठे क्या करते थे ?

(छ) गिलहरियोंके बच्चे पेड़ की टहनी से नीचे गिर जाने पर उनकी माताएँ क्या करती थीं ?

(ज) नेहरूजी किसलिए चिंतित होने लगे ?

(झ) कौन गिलहरी के बच्चे को उठाकर नेहरूजी की कोठरी में ले आया ?

(ञ) पांडेजी आते ही गिलहरी के बच्चों के बारे में क्या बोले ?

(ट) जेल में किनका पालन-पोषण करना कठिन समस्या हो गई थी ?

(ठ) गिलहरी के बच्चे के बारे में सब क्यों परेशान थे ?

(ड) नेहरूजी की कोठरी में किसने अपना घोंसला बना रखा था ?

(ढ) अल्मोड़ा जेल में नेहरूजी को क्या सुनकर बड़ा आनन्द आता था ?

(ण) बरेली जेल में क्या देखने योग्य थीं ?

(त) भीड़ पर किसने सीधा आक्रमण किया ?

(थ) नेहरूजी ने अपनी कोठरी में किसकी तलाश की ?

(द) साँप के बारे में नेहरूजी के मन में क्या विचार थे ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए ।

(क) यह निबंध किसकी आत्मकथा का अंश है ?

(i) महात्मागांधी

(ii) जवाहरलाल नेहरू

(iii) लोकमान्य तिलक

(iv) स्वामी विवेकानन्द

(ख) जेल में दूसरे कार्यों से फुरसत होने के कारण लेखक किसके अधिक निकट होता था ?

(i) प्रकृति

(ii) सूर्य

(iii) अमीर आदमी

(iv) जेल के अधिकारी

(ग) गिलहरियों का कौन-सा काम देखकर लेखक को बड़ा आनंद आता था ?

(i) दौड़ना

(ii) सोना

(iii) खेलना

(iv) अठखेलियाँ

(घ) लखनऊ जेल में एक गिलहरी लेखक के पैरों पर चढ़कर कहाँ बैठती थी ?

(i) सिर

(ii) गोद

(iii) हाथ

(iv) कान

(ङ) क्षणभर में जेलर हाथ में क्या लाए ?

(i) स्याही

(ii) रोटी

(iii) पानी

(iv) रुई

(च) गिलहरी के बच्चों ने चूस-चूसकर क्या पिया ?

(i) पानी

(ii) दूध

(iii) दही

(iv) लस्सी

(छ) अलमोड़ा जेल में नेहरूजी की कोठरी में किसका एक जोड़ा था ?

(i) कबूतर

(ii) मैना

(iii) तोता

(iv) कौआ

(ज) देहरादून जेल में सैकड़ों प्रकार की क्या थीं ?
- (i) मैना
- (ii) तोता
- (iii) चिड़ियाँ
- (iv) गिलहरी

(झ) बरेली जेल में किसकी विजय हुई ?
- (i) बहादूरी
- (ii) साहस
- (iii) कायरता
- (iv) दुर्बलता

(ञ) बरेली जेल की कोठरियों में अक्सर क्या घूमा करते थे ?
- (i) साँप
- (ii) बिच्छू
- (iii) बन्दर
- (iv) चूहे

(ट) लेखक को भिन्न-भिन्न जेलों में क्यों रहना पड़ा ?
- (i) उनके लेख आपत्तिजनक थे ।
- (ii) उनके पास रहने का कोई घर नहीं था ।
- (iii) वे जेलों के जीवन का अध्ययन कर रहे थे ।
- (iv) वे अंग्रेजो के विरुद्ध थे ।

(ठ) लेखक के अनुसार जेल का जीवन कैसा होता है ?
- (i) आनंदित करनेवाला
- (ii) विविधतापूर्ण
- (iii) मौज़-मस्ती भरा
- (iv) प्रतिदिन एक-सा

(ड) लेखक का जेल की कोठरियों में मिले जीवों से कैसा संबंध नहीं था ?

(i) सद्‌भावनापूर्ण

(ii) प्रेमपूर्ण

(iii) मित्रता का

(iv) भय का

भाषा - ज्ञान

1. उदाहरण के अनुसार वचन बदलिए ।

एकवचन	बहुवचन	वचन का कारक/विभक्ति सहित रूप
उदाहरण :		
गिलहरी	गिलहरियाँ	गिलहरियों ने
मक्खी	....	.... के
कोठरी	....	.... में
दीवार	दीवारें	.... पर
आँख	....	.... में
माता	माताएँ	.... को
रेखा	....	रेखाओं में
बोतल	....	.... में
कीड़ा	कीड़े	.... ने
बच्चा	....	बच्चों को

चिड़िया	....	..............ने
रस्सी	....	..............से
महीना	....	..............में
बरामदा	....	..............पर
रोटी	....	..............से

2. सुबह पक्षी घोंसले से बाहर निकलते हैं ।

शाम को गायें घर लौटती हैं ।

उपर के वाक्यों में सुबह का विलोम/विपरीत शब्द शाम है । उसी प्रकार बाहर का विलोम/विपरीत शब्द घर है । उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित के विलोम/विपरीत शब्द लिखिए : दूर, अपरिचित, शान्ति, पास, अपना, स्वतंत्र, देर, सरल, असुरक्षित, उपर, भरा, बड़ा, अनेक, कठोर, पालतू, सीधा ।

3.
- पेड़ के नीचे नेहरूजी बैठे हैं ।
- गिलहरी मुँह की ओर देखने लगती ।
- कोठरी के अंदर साँप घुस आया ।

उपर के वाक्यों में 'के नीचे', 'की ओर', 'के अंदर' शब्द पेड़, गिलहरी, कोठरी के साथ आए हैं । ये शब्द क्रमश: नेहरूजी, मुँह, साँप से इनका संबंध बता रहे हैं ।

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के साथ लगकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ बताएँ, वे संबंधबोधक अव्यय कहलाते हैं । सामान्य रूप से 'के' से संबंधबोधक शब्दों की पहचान की जा सकती है ।

कुछ संबंधबोधक शब्द : के आगे, के पीछे, के बाहर, के सामने, के बहाने, के विपरीत, के मार्फत, की ओर, की तरह, की भाँति आदि ।

●

वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर वेंकट रामन

धीरंजन मालवे

लेखक परिचय :

धीरंजन मालवे का जन्म बिहार के नालंदा जिले के डुँवरावाँ गाँव में 9 मार्च 1952 को हुआ । उन्होंने ऊँची डिग्रियाँ हासिल कीं । एम.एस.सी. के साथ एम.बी.ए. और एल.एल.बी. भी पास की । वे आकाशवाणी और दूरदर्शन से जुड़े रहे । वैज्ञानिक जानकारी लोगों तक पहुँचाने का काम किया । कई भारतीय वैज्ञानिकों की संक्षिप्त जीवनियाँ भी लिखीं । ये सब उनकी 'विश्व-विख्यात भारतीय वैज्ञानिक' पुस्तक में समाहित हैं । मालवेजी की भाषा सीधी, सरल और वैज्ञानिक शब्दावली से युक्त है ।

विचार-विन्दु :

प्रस्तुत पाठ में नोबेल विजेता प्रथम भारतीय वैज्ञानिक चन्द्रशेखर वेंकट रामन का जीवन वर्णित है । उनके जीवन के संघर्ष की कथा कही गई है । रामन ने ग्यारह साल की उम्र में मैट्रिक पास किया । फिर विशेष योग्यता के साथ इंटरमीडिएट पास किया । आगे भौतिकी और अंग्रेजी में स्वर्णपदक के साथ बी.ए. और प्रथम श्रेणी में एम.ए. की डिग्री हासिल की । मात्र अट्ठारह साल की उम्र में कोलकाता में भारत सरकार के वित्त-विभाग में नौकरी की । उनकी प्रतिभा से उनके अध्यापक भी अभिभूत थे । रामन भारत में विज्ञान की उन्नति के चिर आकांक्षी थे । भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में उन्होंने नयी खोज की । इसलिए सन् 1930 ई. में उन्हें नोबेल पुरस्कार मिला । एक मेधावी छात्र से महान वैज्ञानिक तक की रामन की संघर्षमय जीवन-यात्रा और उनकी उपलब्धियों की जानकारी यह पाठ प्रदान करता है ।

पेड़ से सेब गिरते हुए तो लोग सदियों से देखते आ रहे थे, मगर गिरने के पीछे छिपे रहस्य को न्यूटन से पहले कोई और जान नहीं पाया था । ठीक उसी प्रकार विराट समुद्र की नील-वर्णीय आभा को भी असंख्य लोग आदिकाल से देखते आ रहे थे, मगर इस आभा पर पड़े रहस्य के परदे को हटाने के लिए हमारे समक्ष उपस्थित हुए सर चंद्रशेखर वेंकट रामन ।

बात सन् 1921 की है जब रामन समुद्री यात्रा पर थे । जहाज के डेक पर खड़े होकर नीले समुद्र को निहारना प्रकृति-प्रेमी रामन् को अच्छा लगता था । वे समुद्र की नीली आभा में घंटों खोए रहते । लेकिन रामन् केवल भावुक प्रकृति-प्रेमी ही नहीं थे, उनके अंदर एक वैज्ञानिक की जिज्ञासा भी उतनी ही सशक्त थी । यही जिज्ञासा उनसे सवाल कर बैठी - 'आखिर समुद्र का रंग नीला ही क्यों होता है ? कुछ और क्यों नहीं ?' रामन् सवाल का जवाब ढूँढ़ने में लग गए । जवाब ढूँढ़ते ही वे विश्वविख्यात बन गए ।

रामन् का जन्म 7 नवंबर सन् 1888 को तामिलनाडु के तिरुचिरापल्ली नगर में हुआ था । इनके पिता विशाखापत्तनम् में गणित और भौतिकी के शिक्षक थे । पिता इन्हें बचपन से गणित और भौतिकी पढ़ाते थे । इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जिन दो विषयों के ज्ञान ने उन्हें जगत-प्रसिद्ध बनाया, उनकी सशक्त नींव उनके पिता ने ही तैयार की थी । कॉलेज की पढ़ाई उन्होंने पहले ए.बी.एन. कॉलेज, तिरुचिरापल्ली से और फिर प्रेसीडेंसी कॉलेज मद्रास से की । बी.ए. और एम.ए.- दोनों ही परीक्षाओं में उन्होंने काफ़ी ऊँचे अंक हासिल किए ।

रामन् का मस्तिष्क विज्ञान के रहस्यों को सुलझाने के लिए बचपन से ही बेचैन रहता था । अपने कॉलेज के ज़माने से ही उन्होंने शोधकार्यों में दिलचस्पी लेना शुरू कर दिया था । उनका पहला शोधपत्र फिलॉसॉफिकल मैगज़ीन में प्रकाशित हुआ था । उनकी

दिली इच्छा तो यही थी कि वे अपना सारा जीवन शोधकार्यों को ही समर्पित कर दें, मगर उन दिनों शोधकार्य को पूरे समय के कैरियर के रूप में अपनाने की कोई खास व्यवस्था नहीं थी । प्रतिभावान छात्र सरकारी नौकरी की ओर आकर्षित होते थे । रामन् भी अपने समय के अन्य सुयोग्य छात्रों की भाँति भारत सरकार के वित्त-विभाग में अफ़सर बन गए । उनकी तैनाती कलकत्ता में हुई ।

कलकत्ता में सरकारी नौकरी के दौरान उन्होंने अपने स्वाभाविक रुझान को बनाए रखा । दफ़्तर से फ़ुर्सत पाते ही वे लौटते हुए बहू बाज़ार आते, जहाँ 'इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ़ साइंस' की प्रयोगशाला थी । यह अपने आपमें एक अनूठी संस्था थी, जिसे कलकत्ता के एक डॉक्टर महेंद्रलाल सरकार ने वर्षों की कठिन मेहनत और लगन के बाद खड़ा किया था । इस संस्था का उद्देश्य था देश में वैज्ञानिक चेतना का विकास करना । अपने महान् उद्देश्यों के बावजूद इस संस्था के पास साधनों का नितांत अभाव था । रामन् इस संस्था की प्रयोगशाला में कामचलाऊ उपकरणों का इस्तेमाल करते हुए शोधकार्य करते । यह अपने आपमें एक आधुनिक हठयोग का उदाहरण था, जिसमें एक साधक दफ़्तर में कड़ी मेहनत के बाद बहू बाज़ार की इस मामूली-सी प्रयोगशाला में पहुँचता और अपनी इच्छाशक्ति के ज़ोर से भौतिक विज्ञान को समृद्ध बनाने के प्रयास करता । उन्हीं दिनों वे वाद्ययंत्रों की ओर आकृष्ट हुए । वे वाद्ययंत्रों की ध्वनियों के पीछे छिपे वैज्ञानिक रहस्यों की परतें खोलने का प्रयास कर रहे थे । इस दौरान उन्होंने अनेक वाद्ययंत्रों का अध्ययन किया जिनमें देशी और विदेशी, दोनों प्रकार के वाद्ययंत्र थे ।

वाद्ययंत्रों पर किए जा रहे शोधकार्यों के दौरान उनके अध्ययन के दायरे में जहाँ वायलिन, चैलो या पियानो जैसे विदेशी वाद्य आए, वहीं वीणा, तानपूरा और मृदंगम् पर भी उन्होंने काम किया । उन्होंने वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर पश्चिमी देशों की इस भ्रांति को तोड़ने की कोशिश की कि भारतीय वाद्ययंत्र विदेशी वाद्यों की तुलना में घटिया

हैं । वाद्ययंत्रों के कंपन के पीछे छिपे गणित पर उन्होंने अच्छा-खासा काम किया और अनेक शोधपत्र भी प्रकाशित किए ।

उस ज़माने के प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री सर आशुतोष मुखर्जी को इस प्रतिभावान युवक के बारे में जानकारी मिली । उन्हीं दिनों कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर का नया पद सृजित हुआ था । मुखर्जी महोदय ने रामन् के समक्ष प्रस्ताव रखा कि वे सरकारी नौकरी छोड़कर कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर का पद स्वीकार कर लें । रामन् के लिए यह एक कठिन निर्णय था । उस ज़माने के हिसाब से वे एक अत्यंत प्रतिष्ठित सरकारी पद पर थे, जिसके साथ मोटी तनख्वाह और अनेक सुविधाएँ जुड़ी हुई थीं । उन्हें नौकरी करते हुए दस वर्ष बीत चुके थे । ऐसी हालत में सरकारी नौकरी छोड़कर कम वेतन और कम सुविधाओंवाली विश्वविद्यालय की नौकरी में आने का फ़ैसला करना हिम्मत का काम था ।

रामन् सरकारी नौकरी की सुख-सुविधाओं को छोड़ सन् 1917 में कलकत्ता विश्वविद्यालय की नौकरी में आ गए । उनके लिए सरस्वती की साधना सरकारी सुख-सुविधाओं से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण थी । कलकत्ता विश्वविद्यालय के शैक्षणिक माहौल में वे अपना पूरा समय अध्ययन, अध्यापन और शोध में बिताने लगे । चार साल बाद यानी सन् 1921 में समुद्र-यात्रा के दौरान जब रामन् के मस्तिष्क में समुद्र के नीले रंग की वजह का सवाल हिलोरें लेने लगा, तो उन्होंने आगे इस दिशा में प्रयोग किए, जिसकी परिणति रामन् प्रभाव की खोज के रूप में हुई ।

रामन ने अनेक ठोस रवों और तरल पदार्थों पर प्रकाश की किरण के प्रभाव का अध्ययन किया । उन्होंने पाया कि जब एकवर्णीय प्रकाश की किरण किसी तरल या ठोस रवेदार पदार्थ से गुज़रती है तो गुज़रने के बाद उसके वर्ण में परिवर्त्तन आता है । वजह यह

होती है कि एकवर्णीय प्रकाश की किरण के फोटॉन जब तरल या ठोस रवे से गुज़रते हुए इनके अणुओं से टकराते हैं तो इस टकराव के परिणामस्वरूप वे या तो ऊर्जा का कुछ अंश खो देते हैं या पा जाते हैं । दोनों ही स्थितियाँ प्रकाश के वर्ण (रंग) में बदलाव लाती हैं । एकवर्णीय प्रकाश की किरणों में सबसे अधिक ऊर्जा बैंजनी रंग के प्रकाश में होती है । बैंजनी के बाद क्रमशः नीले, आसमानी, हरे, पीले, नारंगी और लाल वर्ण का नंबर आता है । इस प्रकार लाल-वर्णीय प्रकाश की ऊर्जा सबसे कम होती है । एकवर्णीय प्रकाश तरल या ठोस रवों से गुज़रते हुए जिस परिमाण में ऊर्जा खोता या पाता है, उसी हिसाब से उसका वर्ण परिवर्त्तित हो जाता है ।

रामन की खोज भौतिकी के क्षेत्र में एक क्रांति के समान थी । इसका पहला परिणाम तो यह हुआ कि प्रकाश की प्रकृति के बारे में आइंस्टाइन के विचारों का प्रायोगिक प्रमाण मिल गया । आइंस्टाइन के पूर्ववर्त्ती वैज्ञानिक प्रकाश को तरंग के रूप में मानते थे, मगर आइंस्टाइन ने बताया कि प्रकाश अति सूक्ष्म कणों की तीव्र धारा के समान है । इन अति सूक्ष्म कणों की तुलना आइंस्टाइन ने बुलेट से की और इन्हें 'फोटॉन' नाम दिया । रामन के प्रयोगों ने आइंस्टाइन की धारणा का प्रत्यक्ष प्रमाण दे दिया, क्योंकि एकवर्णीय प्रकाश के वर्ण में परिवर्त्तन यह साफ़तौर पर प्रमाणित करता है कि प्रकाश की किरण तीव्रगामी सूक्ष्म कणों के प्रवाह के रूप में व्यवहार करती है ।

रामन की खोज की वजह से पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की आंतरिक संरचना का अध्ययन सहज हो गया । पहले इस काम के लिए इंफ्रा रेड स्पेक्ट्रोस्कोपी का सहारा लिया जाता था । यह मुश्किल तकनीक है और गलतियों की संभावना बहुत अधिक रहती है । रामन की खोज के बाद पदार्थों की आणविक और परमाणविक संरचना के अध्ययन के लिए रामन स्पेक्ट्रोस्कोपी का सहारा लिया जाने लगा । यह तकनीक

एकवर्णीय प्रकाश के वर्ण में परिवर्त्तन के आधार पर पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की संरचना की सटीक जानकारी देती है । इस जानकारी की वजह से पदार्थों का संश्लेषण प्रयोगशाला में करना तथा अनेक उपयोगी पदार्थों का कृत्रिम रूप से निर्माण संभव हो गया है ।

रामन प्रभाव की खोज ने रामन् को विश्व के चोटी के वैज्ञानिकों की पंक्ति में ला खड़ा किया । पुरस्कारों और सम्मानों की तो जैसे झड़ी-सी लगी रही । उन्हें सन् 1924 में रॉयल सोसाइटी की सदस्यता से सम्मानित किया गया । सन् 1929 में उन्हें 'सर' की उपाधि प्रदान की गई । ठीक अगले ही साल उन्हें विश्व के सर्वोच्च पुरस्कार भौतिकी में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया । उन्हें और भी कई पुरस्कार मिले, जैसे रोम का मेत्यूसी पदक, रॉयल सोसाइटी का ह्यूज़ पदक, फ़िलोडेल्फ़िया इंस्टीट्यूट का फ्रैंकलिन पदक, सोवियत रूस का अंतर्राष्ट्रीय लेनिन पुरस्कार आदि । सन् 1954 में रामन् को देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत-रत्न' से सम्मानित किया गया । वे नोबेल पुरस्कार पानेवाले पहले भारतीय वैज्ञानिक थे । उनके बाद यह पुरस्कार भारतीय नागरिकतावाले किसी अन्य वैज्ञानिक को अभी तक नहीं मिल पाया है । उन्हें अधिकांश सम्मान उस दौर में मिले जब भारत अंग्रेज़ों का गुलाम था । उन्हें मिलनेवाले सम्मानों ने भारत को एक नया आत्म-सम्मान और आत्म-विश्वास दिया । विज्ञान के क्षेत्र में उन्होंने एक नयी भारतीय चेतना को जाग्रत किया ।

भारतीय संस्कृति से रामन् को हमेशा ही गहरा लगाव रहा । उन्होंने अपनी भारतीय पहचान को हमेशा अक्षुण्ण रखा । अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि के बाद भी उन्होंने अपने दक्षिण भारतीय पहनावे को नहीं छोड़ा । वे कट्टर शाकाहारी थे और मदिरा से सख्त परहेज रखते थे । जब वे नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने स्टॉकहोम गए तो वहाँ उन्होंने शराब पीने से इनकार किया तो एक आयोजक ने परिहास में उनसे कहा कि रामन् ने जब अल्कोहल पर

रामन् प्रभाव का प्रदर्शन कर हमें आह्लादित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी, तो रामन् पर अल्कोहल के प्रभाव का प्रदर्शन करने से परहेज़ क्यों ?

रामन् का वैज्ञानिक व्यक्तित्व प्रयोगों और शोधपत्र-लेखन तक ही सिमटा हुआ नहीं था । उनके अंदर एक राष्ट्रीय चेतना थी और वे देश में वैज्ञानिक दृष्टि और चिंतन के विकास के प्रति समर्पित थे । उन्हें अपने शुरुआती दिन हमेशा ही याद रहे जब उन्हें ढंग की प्रयोगशाला और उपकरणों के अभाव में काफ़ी संघर्ष करना पड़ा था । इसीलिए उन्होंने एक अत्यंत उन्नत प्रयोगशाला और शोध-संस्थान की स्थापना की जो बंगलौर में स्थित है और उन्हीं के नाम पर 'रामन् रिसर्च इंस्टीट्यूट्' नाम से जानी जाती है । भौतिक शास्त्र में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने 'इंडियन जरनल ऑफ़ फ़िज़िक्स' नामक शोध-पत्रिका प्रारंभ की । अपने जीवन-काल में उन्होंने सैकड़ों शोध-छात्रों का मार्गदर्शन किया । जिस प्रकार एक दीपक से अन्य कई दीपक जल उठते हैं, उसी प्रकार उनके शोध-छात्रों ने आगे चलकर काफ़ी अच्छा काम किया । उन्हीं में कई छात्र बाद में उच्च पदों पर प्रतिष्ठित हुए । विज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए वे 'करेंट साइंस' नामक एक पत्रिका का भी संपादन करते थे । रामन प्रभाव केवल प्रकाश की किरणों तक ही सिमटा नहीं था; उन्होंने अपने व्यक्तित्व के प्रकाश की किरणों से पूरे देश को आलोकित और प्रभावित किया । उनकी मृत्यु 21 नवंबर सन् 1970 के दिन 82 वर्ष की आयु में हुई ।

रामन् वैज्ञानिक चेतना और दृष्टि की साक्षात् प्रतिमूर्त्ति थे । उन्होंने हमें हमेशा ही यह संदेश दिया कि हम अपने आसपास घट रही विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं की छानबीन एक वैज्ञानिक दृष्टि से करें । तभी तो उन्होंने संगीत के सुर-ताल और प्रकाश की किरणों की आभा के अंदर से वैज्ञानिक सिद्धांत खोज निकाले । हमारे आसपास ऐसी न जाने कितनी

ही चीज़ें बिखरी पड़ी हैं, जो अपने पात्र की तलाश में हैं । ज़रूरत है रामन् के जीवन से प्रेरणा लेने की और प्रकृति के बीच छुपे वैज्ञानिक रहस्य का भेदन करने की ।

शब्दार्थ

आभा - चमक । जिज्ञासा - जानने की इच्छा । नींव - आधार । दिलचस्पी - आग्रह । दिली इच्छा - मन या हृदय की कामना । तैनाती - नियुक्ति । विश्वविख्यात - संसार में प्रसिद्ध । निहारना - देखना । असंख्य - अनगिनत । बहुत - अधिक । रुझान - झुकाव । इस्तेमाल - व्यवहार । भौतिकी - पदार्थ विज्ञान, वह विज्ञान जिसमें तत्त्वों के गुण आदि का विवेचन किया गया हो, (Physics) । शोध - खोज (Research); अनुसंधान । तनख्वाह - वेतन । माहौल - वातावरण । ठोस रवों - बिल्लौर, मणिभ । फोटॉन - प्रकाश का अंश । एकवर्णीय- एक रंग का । ऊर्जा - शक्ति, बल । क्रांति - आंदोलन, उलटफेर । संरचना - गठन रीति । आणविक - अणु संबंधित । परमाणविक - परमाणु से संबंधित । अक्षुण्ण - अखंडित । आह्लादित - आनंदित । इंफ्रा रेड स्पेक्ट्रोस्कापी - अवरक्त स्पेक्ट्रम विज्ञान । संश्लेषण - मिलान करना (Synthesis) । कट्टर - दृढ़ । नोबेल पुरस्कार - यह एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का सर्वोच्च पुरस्कार है जो साहित्य, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, अर्थशास्त्र तथा शांति के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य के लिए दिया जाता है । नोबेल पुरस्कार के जन्मदाता अल्फ्रेड नोबेल हैं, जिनका जन्म सन 1833 ई. में स्वीडेन स्टॉकहोम नामक स्थान में हुआ था । अल्फ्रेड नोबेल ने सन् 1866 ई. में विध्वंसकारी डायनामाइट का आविष्कार किया था । इस नोबेल पुरस्कार को सर्वप्रथम सन् 1901 ई. में दिया गया ।

प्रश्न और अभ्यास

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :**

(क) रामन के प्रारंभिक शोध-कार्य को आधुनिक हठयोग क्यों कहा गया है ?

(ख) रामन-प्रभाव का परिणाम कैसा रहा ?

(ग) भारतीय संस्कृति से रामन का लगाव कैसा था ?

(घ) देश में वैज्ञानिक दृष्टि और चिंतन के विकास के लिए रामन ने क्या योगदान दिया ?

(ङ) रामन को क्या-क्या पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए ?

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :**

(क) पेड़ से सेब गिरने के पीछे छिपे रहस्य को सबसे पहले कौन समझ पाया ?

(ख) रामन का जन्म कब हुआ था ?

(ग) रामन के पिता किस विषय के शिक्षक थे ?

(घ) रामन का पहला शोधपत्र किस में प्रकाशित हुआ ?

(ङ) रामन को भारत-सरकार के किस विभाग में नौकरी मिली ?

(च) डॉक्टर महेन्द्रलाल सरकार ने कौन-सी संस्था खड़ी की थी ?

(छ) रामन ने कब सरकारी नौकरी छोड़ दी ?

(ज) समुद्र-यात्रा पर रामन कब निकले ?

(झ) रामन को कब 'सर' की उपाधि मिली ?

(ञ) सन् 1954 ई. में रामन को किस सम्मान से सम्मानित किया गया ?

(ट) रामन की खोज ने किसे सहज बनाया ?

(ठ) रामन ने 'रामन इंस्टीच्यूट' की स्थापना क्यों की ?

3. कोष्ठक से सही उत्तर चुनकर रिक्त स्थान भरिए :

(क) एकवर्णीय प्रकाश की किरणों में सब से अधिक ऊर्जा ________ रंग के प्रकाश में होती है ।

(नीले, बैंजनी, नारंगी, आसमानी)

(ख) रामन की खोज ________ के क्षेत्र में एक क्रांति के समान थी ।

(गणित, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान)

(ग) रामन को सन् ________ में रॉयल सोसाइटी की सदस्यता से सम्मानित किया गया था ।

(1921, 1929, 1924, 1954)

(घ) रामन नोबेल पुरस्कार पाने वाले ________ भारतीय वैज्ञानिक थे ।

(दूसरे, तीसरे, पहले, चौथे)

(ङ) रामन की मृत्यु ________ वर्ष की आयु में हुई ।

(85, 82, 83, 84)

भाषा - ज्ञान

1. समानार्थी शब्द लिखिए :

समुद्र, दफ्तर, प्रकाश, तलाश, मेहनत, जवाब, सवाल, पेड़, फैसला

2. पाठ में आए निम्न शब्दों के लिंग बताइए :

यात्रा, समुद्र, जिज्ञासा, नींव, ऊर्जा, आभा, दीपक, फैसला, प्रस्ताव, परदा

3. वचन बदलिए :

ध्वनि, नौकरी, चीज़, जिज्ञासा

4. विज्ञान + इक = वैज्ञानिक

यहाँ 'विज्ञान' शब्द में 'इक' प्रत्यय जुड़कर नया शब्द 'वैज्ञानिक' बना है । इसी प्रकार 'इक' प्रत्यय जोड़कर पाँच शब्द बनाइए ।

5. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित शब्दों को स्पष्ट कीजिए : (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि)

(क) <u>वे</u> समुद्र की नीली आभा में घंटों <u>खोए रहते</u> ।

(ख) इस <u>संस्था</u> का उद्देश्य था देश में <u>वैज्ञानिक</u> चेतना का विकास करना ।

(ग) <u>प्रतिभावान</u> <u>छात्र</u>, <u>सरकारी</u> <u>नौकरी</u> की ओर आकर्षित होते थे ।

(घ) <u>हमारे</u> आसपास ऐसी न जाने कितनी ही चीज़ें <u>बिखरी पड़ी हैं</u> ।

6. सही विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए :

(क) वे अपना पूरा समय अध्ययन अध्यापन और शोध में बिताने लगे

(ख) आखिर समुद्र का रंग नीला ही क्यों होता है

(ग) बैंजनी के बाद क्रमश: नीले आसमानी हरे पीले नारंगी और लाल वर्ण का नंबर आता है

7. रिक्त स्थानों में सही परसर्ग भरिए :

(क) भारतीय संस्कृति ________ रामन ________ हमेशा ही गहरा लगाव रहा ।

(ख) रामन वैज्ञानिक चेतना और दृष्टि ________ साक्षात् प्रतिमूर्त्ति थे ।

(ग) रामन ________ खोज भौतिकी ________ क्षेत्र ________ एक क्रांति ________ समान थी ।

गृह कार्य :

(क) नोबेल पुरस्कार पानेवाले भारतीयों के बारे में जानकारी हासिल कीजिए ।

(ख) आइजाक न्यूटन की उपलब्धि के बारे में पता लगाइए ।

●

अध्यापक के नाम पत्र

Q1DF8V

अब्राहम लिंकन

लेखक परिचय :

अब्राहम लिंकन अमरीका के राष्ट्रपति थे । वे एक कुशल राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ पुस्तक-प्रेमी, गंभीर विचारक और लेखक भी थे । उनका जन्म 12 फरवरी सन् 1809 ई. में एक ऐसे परिवार में हुआ, जिसके पास रहने को न अच्छा घर था और न ही बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने का कोई साधन ।

उन्होंने देश को सदा के लिए दो भागों में बाँटने से बचाया और अमानवीय गुलाम प्रथा से भी देश को मुक्ति दिलाई । वे अपने प्रयत्न से विभिन्न स्थानों से पुस्तकें माँगकर रात को चूल्हे की आग के प्रकाश में पढ़कर ज्ञान प्राप्त किया करते थे । उनका निधन 15 अप्रैल सन् 1865 ई. में हुआ ।

विचार-विन्दु :

पत्र-शैली में लिखा गया यह पाठ बहुत प्रेरणादायक है । इसमें अमरीकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने अपने पुत्र के अध्यापक को एक पत्र लिखा है - जिसमें अध्यापक के द्वारा किसी विद्यार्थी को ईमानदार, परिश्रमी, धैर्यवान, आत्मनिर्भर बनाने के साथ-साथ अपने विचार स्वयं बनाने पर बल दिया है, ताकि उसको अपने आप पर पूरा विश्वास हो ।

अध्यापक के नाम पत्र

अमेरिका के मशहूर राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने अपने बेटे के हेडमास्टर को एक चिट्ठी लिखी थी । बरसों बाद भी एक पिता की सलाह आज उतनी ही खरी है, जितनी कल थी ।

चिट्ठी कुछ इस तरह थी-

''उसे बहुत कुछ सीखना है । मैं जानता हूँ कि सभी इंसान ईमानदार और सच्चे नहीं होते, लेकिन हो सके तो उसे किताबों के जादू के बारे में सिखाइए । इसके अलावा हो सके तो उसे चीज़ों के बारे में सोचने का वक्त भी दीजिए, ताकि पंछियों के आसमान में उड़ान भरने, मधुमक्खियों के धूप में थिरकने और हरे-भरे पहाड़ों पर फूल के खिलने के रहस्यों पर सोच सके । स्कूल में उसे सिखाइए कि धोखा देने से असफल होना अच्छा है । भले ही दुनिया उसके विचारों को गलत बताए, लेकिन वह अपनी सोच पर भरोसा रखना सीखे । उसे विनम्रों के साथ विनम्रता और सख़्त इंसानों के साथ सख़्ती करना सिखाइए । उसे इतनी ताकत दीजिए कि वह लकीर का फ़क़ीर होकर भीड़ के साथ न चल पड़े । उसे सिखाइए कि वह सबकी बातें सुने, लेकिन उन्हें सच की कसौटी पर कसे और केवल सही चीज़ों को ही मंजूर करे ।

उसे सिखाइए कि कैसे दुख में भी हँसा जाता है....कि आँसू अगर बहे तो उसमें कोई शर्म नहीं है । उसे सिखाइए कि सनकी लोगों को झिड़क दे और बहुत मीठी-मीठी बातों से सावधान रहे । अपनी ताकत और दिमाग की ऊँची कीमत तो लगाए, लेकिन अपने दिल और आत्मा का सौदा न करे । उसे सिखाइए कि अगर उसे लगता है कि वह सही है तो सामने खड़ी हुई चीखती भीड़ को अनसुना कर दे । उसके साथ नरमी से पेश आइए, लेकिन हमेशा गले से लगाकर मत रखिए, क्योंकि आग में तपकर ही लोहा फ़ौलाद बनता है ।

उसे इतना बहादुर बनाइए कि वह आवाज़ उठा सके, इतना धैर्यवान बनाइए कि बहादुरी दिखा सके । उसे खुद में भरोसा करना सिखाइए, ताकि वह इंसानियत में भरोसा रख सके । मेरी उम्मीदें ढेर सारी हैं, देखते हैं कि आप क्या कर सकते हैं । मेरा बेटा एक अच्छा बच्चा है ।''

शब्दार्थ

मशहूर - ख्याति प्राप्त, प्रसिद्ध । सलाह - परामर्श । खरी - सही, बढ़िया, अच्छा । इंसान - मनुष्य, नर । ईमानदार - सच्चा, विश्वास पात्र । जादू - इन्द्रजाल । अलावा - सिवाय, अतिरिक्त । चीजें - सामान, सामग्री । वक़्त - समय । ताकि - इसलिए कि । पंछी - पक्षी, चिड़िया । सोच - चिंता, फिक्र । थिरकना - नाच में पाँव का उठाना । हरे भरे - हरे पेड़-पत्तों से भरा । धोखा - भ्रम में डालनेवाला मिथ्या व्यवहार, छल । गलत - भूल, अशुद्ध । विनम्रता - नरमी का व्यवहार । सख़्त- कठोर । ताकत - शक्ति, बल । लकीर का फकीर - पुरानी परंपरा पर चलने वाला (मुहावरा) । फकीर - साधु, त्यागी । कसौटी - परीक्षा, जाँच, परख । मंजूर - स्वीकार । शर्म - लज्जा । सनकी - पागलों की-सी प्रकृति या आचरण वाले । झिड़कना - अवज्ञा या तिरस्कार पूर्वक बिगड़कर कड़वी बात करना । दिमाग - मस्तिक । कीमत - दाम, मूल्य । सौदा - माल, पदार्थ, वस्तु । सही - ठीक, शुद्ध । अनसुना - न सुनना । पेश- आगे, सामने । हमेशा - सदा, सर्वदा । गले लगाना - आलिंगन करना (मुहावरा) । आग - अग्नि । फौलाद- पक्का लोहा । बहादुर - साहसी, उत्साही । आवाज - शब्द, ध्वनि । आवाज उठाना - विरोध करना (मुहावरा) । भरोसा - विश्वास । इंसानियत - मानवता । उम्मीद - आशा, भरोसा ।

प्रश्न और अभ्यास

1. इन प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) अब्राहम लिंकन ने हेडमास्टर से क्या चाहा ?

(ख) वे अपने पुत्र में किन-किन गुणों का समावेश देखना चाहते हैं ?

(ग) अब्राहम लिंकन ने हेडमास्टर को चिट्ठी क्यों लिखी थी ?

(घ) बच्चों को सोचने के लिए वक्त देने की क्या आवश्यकता है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

(क) यह पत्र किसने किसको लिखा है ?

(ख) अब्राहम लिंकन कौन थे ?

(ग) लिंकन किसे, क्या सिखाने की प्रार्थना करते हैं ?

(घ) स्कूल में उसे क्या सिखाना अच्छा है ?

(ङ) उसे इतनी ताकत दीजिए कि वह क्या-होकर भीड़ के साथ न चल सके ?

(च) उसे सबकी बात सुनकर किसकी कसौटी पर कसनी चाहिए ?

(छ) कौन-सी बात शर्म की बात नहीं है ?

(ज) किस बात से उसे सावधान रहना चाहिए ?

(झ) व्यक्ति को किसका सौदा नहीं करना चाहिए ?

(ञ) लोहा कैसे फौलाद बनता है ?

(ट) लिंकन बेटे को बहादुर और धैर्यवान क्यों बनाना चाहते थे ?

(ठ) पत्र के अंत में लिंकन क्या चाहते हैं ?

3. प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के चार विकल्प दिए गए हैं । सही विकल्प चुनकर लिखिए :

(क) 'अध्यापक के नाम पत्र' किसने लिखा है ?

(i) अध्यापक ने

(ii) राष्ट्रपति ने

(iii) बेटे ने

(iv) अब्राहम लिंकन ने

(ख) लिंकन ने किसके अध्यापक को पत्र लिखा ?

(i) माता के

(ii) बेटे के

(iii) हेडमास्टर के

(iv) पिता के

(ग) 'अब्राहम लिंकन' किस चीज का जादू सिखाने का आग्रह करते हैं ?

(i) किताब

(ii) ईमानदारी

(iii) सच्चाई

(iv) चीज

(घ) आसमान में कौन उड़ता है ?

(i) मधुमक्खी

(ii) पहाड़

(iii) पक्षी

(iv) धूप

(ङ) उसे किसकी कसौटी पर कसना चाहिए ?

(i) झूठ

(ii) सच

(iii) भय

(iv) सोना

(च) आँसू अगर बहे तो उसमें क्या नहीं करना चाहिए ?

(i) द्वेष

(ii) शर्म

(iii) दुःख

(iv) घृणा

(छ) धोखा देने से अच्छा क्या है ?

(i) इंसान बनना

(ii) असफल होना

(iii) भरोसा रखना

(iv) सफल होना

(ज) आग में तपकर लोहा क्या बनता है ?

(i) गर्म

(ii) नरम

(iii) फौलाद

(iv) ताकत

(झ) आवाज उठाने के लिए क्या बनना चाहिए ?

(i) बहादुर

(ii) चोर

(iii) स्थिर

(iv) अस्थिर

(ञ) मेरा बेटा एक कैसा बच्चा है ?

(i) बुरा

(ii) दुष्ट

(iii) अच्छा

(iv) सुन्दर

भाषा - ज्ञान

1. 'ई' प्रत्यय का प्रयोग करके नए शब्द बनाइए ।

जैसे :

सनक + ई = सनकी	नरम + ई = ...
झिड़क + ई = ...	कीमत + ई = ...
ईमानदार + ई = ...	मेहनत + ई = ...
बहादुर + ई = ...	सख्त + ई = ...

2. (क) पंछी आकाश में उड़ता है।

(ख) चिड़िया आसमान में उड़ती है ।

ऊपर के (क) वाक्य में पंछी और (ख) वाक्य में चिड़िया एक ही अर्थ बतलाते हैं । उसी प्रकार (क) वाक्य में आकाश और (ख) वाक्य में आसमान एक ही अर्थ बतलाते हैं । अतः पंछी शब्द का समानार्थक शब्द चिड़िया और आकाश का समानार्थक शब्द आसमान है । इस प्रकार निम्नलिखित शब्दों के समानार्थक शब्द लिखिए ।

ताकत, कीमत, फूल, वक्त, इन्सान, दुनिया, गलत, मंजूर, सावधान, हमेशा, सख्त

3. **निम्नलिखित गद्यांश में से सर्वनाम शब्द छाँटकर लिखिए :**

'उसे बहुत कुछ सीखना है । मैं जानता हूँ कि सभी इन्सान ईमानदार और सच्चे नहीं होते, लेकिन हो सके तो उसे किताबों के जादू के बारे में सिखाइए ।'

4. **भाववाचक संज्ञा बनाइए :**

बहादुर	धैर्यवान
इंसान	नरम
सच्चा	विनम्र
अच्छा	

5. **बहुवचन रूप लिखिए :**

मधुमक्खी................	सच्चा ....
वह	उसे ....
बच्चा	बेटा ....
किताब में	चीज के ....

पंछी के	रहस्य के ....
गला	आवाज ....
ताकत	लकीर ....
कसौटी	बात ....
सौदा	उम्मीद ....

6. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

(क) रहस्य

(ख) सावधान

(ग) अलावा

(घ) धैर्यवान

(ङ) फौलाद

(च) आवाज

7. उदाहरण के अनुसार वाक्य-परिवर्त्तन कीजिए ।

उदाहरण : हमेशा गले लगाइए । हमेशा गले मत लगाइए ।

(क) उन्हें सच की कसौटी पर कसें । ....

(ख) हमेशा आँसू बहाइए । ....

(ग) उसे इतना बहादुर बनाइए । ....

(घ) हमेशा दूसरों की बात सुनिए । ....

●